प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण

(चौथा खण्ड)

सम्पादक
आचार्य नलिनविलोचन शर्मा
शोध-सहायक
श्रीरामनारायण शास्त्री
श्रीदामोदर मिश्र
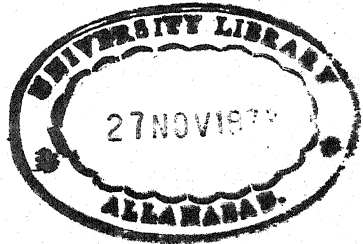
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

वक्तव्य

बिहार-राज्य में पुरानी पोथियों की खोज पहले कभी सुव्यवस्थित रीति से नहीं हुई थी। इस बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में, दरभङ्गा-राज के विराट् पुस्तकालय में, जब महामहोपाध्याय डॉक्टर गङ्गानाथ झा उसके ग्रन्थागारिक के पद को सुशोभित करते थे, तब प्राचीन पाण्डुलिपियों की खोज का काम, मिथिला और नैपाल में हुआ था। उस खोज में मिली हुई पोथियों से महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री आदि विद्वानों ने लाभ भी उठाया था। फिर, बीसवीं शती की दूसरी दशाब्दी में बिहार-रिसर्च-सोसाइटी, आरा की नागरी-प्रचारिणी सभा, गया की मन्नूलाल-लाइब्रेरी और भागलपुर के भगवान-पुस्तकालय ने भी पुरानी पोथियों की खोज पर ध्यान दिया था। उक्त सोसाइटी के तत्त्वावधान में संगृहीत पोथियों के आधार पर, गवेषणा कार्य भी हुआ था, पर अन्य तीन संस्थाओं ने केवल संग्रह-कार्य ही किया, अपने संग्रह का सार्वजनिक उपयोग शोध-कार्य में कराने की ओर ध्यान नहीं दिया। यों तो व्यक्तिगत रूप से भी कुछ विद्वानों ने पोथियों की खोज कराई थी—जैसे डॉक्टर काशीप्रसाद जायसवाल, वैदिक रिसर्च स्कॉलर पं० अयोध्याप्रसाद आदि—पर उनकी हस्तगत पोथियाँ केवल निजी उपयोग के लिए थीं, उनका कभी सार्वजनिक उपयोग न हुआ। आज भी बिहार के कई पुराने पुस्तकालयों में हस्तलिखित पोथियाँ पाई जाती हैं, पर गवेषणा के कार्य में पोथियों से सहायता लेने की भावना या उसमें उनका उपयोग करने की प्रवृत्ति कहीं भी देखने में नहीं आती। पोथियों को केवल एकत्रित करने से कोई वास्तविक लाभ नहीं—यदि उनके सार्वजनिक सदुपयोग की समुचित व्यवस्था न हो।

अब पटना-विश्वविद्यालय और बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद् की ओर से सुव्यवस्थित रूप में खोज का काम हो रहा है यद्यपि यह काम कुछ ही वर्षों से होने लगा है, तथापि इसकी प्रगति देखकर आशा होती है कि भविष्य में इससे साहित्य का महान् उपकार होगा और आनेवाली पीढ़ी इस दूरदर्शिता के लिए कृतज्ञता भी प्रकट करेगी। समस्त प्रान्त में हजारों पोथियाँ जहाँ-तहाँ बिखरी पड़ी हैं। उनका शतांश भी अबतक की खोज में संगृहीत नहीं हुआ है। शोधकर्त्ताओं का अनुभव और अनुमान है कि बिहार-राज्य के गाँवों में, और कहीं-कहीं नगरों में भी, असंख्य प्राचीन पोथियाँ अरक्षित दशा में पड़ी हुई हैं। यदि उनकी सुरक्षा पर यथोचित ध्यान न दिया गया, तो प्रचुर परिमाण में अमूल्य साहित्य-सम्पत्ति के नष्ट-भ्रष्ट हो जाने की आशंका है। हमारे ग्रन्थ-शोधकों को मालूम है कि जिन

स्थानों में वे अनेक पुरानी पोथियों का पता लगा आये थे, उन स्थानों में अब एक भी पोथी नहीं बची है — सब की-सब किसी-न-किसी तरह नष्ट हो गई।

दक्षिण और उत्तर-बिहार के अनेक स्थानों में प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों के बृहत् भाण्डार का पता लगा है। उत्तर-बिहार की बहुत-सी पोथियाँ अग्नि-काण्ड और बाढ़ से नष्ट हो चुकी हैं। दक्षिण-बिहार में भी दीमकों और चूहों से विशाल ग्रन्थराशि का संहार होता जा रहा है। खोज से पता चला है कि बिहार-राज्यान्तर्गत छोटानागपुर-प्रदेश में भी प्रचुर साहित्यिक निधि काल का कलेवा हो रही है। खेद है कि सरस्वती-भाण्डार का अहर्निश क्षय हो रहा है, पर हमारा समाज आज भी उसकी रक्षा में तत्पर अथवा सजग नहीं है। सबसे बढ़कर दुःख यह है कि ग्रन्थान्वेषकों को, नाना प्रकार की असुविधाओं और कठिनाइयों का सामना करने तथा उचित मूल्य देने पर भी, कुछ ही पोथियाँ मिलती हैं—अधिकांश लोग पोथियाँ देने या बेचने को राजी ही नहीं होते और कितने ही लोग तो पोथियाँ दिखाते भी नहीं, प्रतिलिपि कराने की सुविधा भला क्यों कर देंगे! इस प्रकार देश की अपार ज्ञान-सम्पदा का दिन-दिन नाश होता जा रहा है।

बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद् के संग्रहालय में संचित पोथियों का विवरणात्मक परिचय क्रमशः त्रैमासिक 'साहित्य' में प्रकाशित होता रहा है और आगे भी होता रहेगा तथा उन विवरणों के दो संग्रह भी पुस्तक-रूप में निकले हैं, जिनसे हिन्दी के कई पुराने कवियों का पता लग चुका है तथा कई अज्ञात एवं अलभ्य ग्रन्थ भी उपलब्ध हो चुके हैं, जिनसे शोध-कार्य में अमूल्य सहायता मिलने की सम्भावना है। आज यह अनुमान करना भी कठिन है कि सभी पोथियों के संगृहीत हो जाने पर गवेषणा की समस्या कितनी सरल हो जायगी। पोथियों का अचार बनानेवालों को भगवान् सुबुद्धि दें।

इस विवरण-पुस्तिका में चार सौ उन्नीस हिन्दी-ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ-अनुसन्धान-विभाग के वर्त्तमान अध्यक्ष आचार्य नलिन-विलोचन शर्मा के निर्देशन में विभागीय अनुसन्धायक श्रीरामनारायण शास्त्री और श्रीदामोदर मिश्र ने विवरण तैयार करने में बड़े मनोयोग से परिश्रम किया है। एक्यासी ग्रन्थकारों का संक्षिप्त परिचय यथास्थान पादटिप्पणियों में अंकित है। विभागाध्यक्ष ने अपने आरम्भिक वक्तव्य में सत्रह बिहारी ग्रन्थकारों का प्रामाणिक परिचय समाविष्ट कर दिया है। इस प्रकार पुरानी पोथियों के विवरण का यह चौथा खण्ड भी पिछले तीन खण्डों की तरह साहित्यिक शोध के कार्य में महत्त्वपूर्ण सहायता पहुँचानेवाला बन गया है। केवल हिन्दी के ही प्राचीन ग्रन्थों का विवरण रहने से इस चौथे खण्ड की उपयोगिता विशेष बढ़ गई है।

इसमें प्रकाशित विवरण पहले त्रैमासिक 'साहित्य' में छपे थे और उन्हीं विवरणों की एक हजार प्रतियाँ इस पुस्तिका के लिए अलग छपवा ली गई थीं। इसीलिए विभागाध्यक्ष के सम्पादकीय वक्तव्य में 'साहित्य' के मुद्रित पृष्ठों की सामग्री यथातथ रूप में ही रह गई। उससे पाठकों को किसी प्रकार का भ्रम या सन्देह न होना चाहिए। प्रेस की उतावली और भूल के इस परिणाम से विवरण की प्रामाणिकता में कोई बाधा नहीं पड़ती।

इसमें बिहार के जो सत्रह ग्रन्थकार हैं, उनके जीवन-परिचय और उनकी रचनाओं के चुने उदाहरण 'हिन्दी-साहित्य और बिहार' नामक पुस्तक में प्रकाशित होंगे। बिहार के विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों और स्नातकों को इन सत्रह साहित्यकारों के सम्बन्ध में विशेष गवेषणा-कार्य करना चाहिए।

प्राचीन हस्तलिखित हिन्दी-ग्रन्थों के आधार पर बिहार में जो शोधकार्य हुए हैं और हो रहे हैं, उनका अधिकांश श्रेय बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् को ही है। साहित्यिक अन्वेषण के प्रथम परिणामस्वरूप परिषद् ने ही एक ग्रन्थ प्रकाशित किया, जो बिहार के सन्त-कवि दरियादास के सम्बन्ध में है और जिसके प्रणेता हमारे इस अनुसन्धान-विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉक्टर धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री हैं। परिषद् ने पुनः उन्हीं की दूसरी पुस्तक (सन्त-मत का सरभंग-सम्प्रदाय) भी प्रकाशित की है, जो इसी विभाग द्वारा किये गये अनुसन्धान-कार्य का परिणाम है। इस दूसरी पुस्तक में अधिकतर सन्त-कवि बिहार के ही हैं। परिषद्-सदस्य डॉक्टर शास्त्री इसी विभाग के संग्रह से लाभ उठाकर बिहार के सन्त-कवि सूरजदास के एकमात्र उपलब्ध ग्रन्थ 'रामजन्म' पर अपना अध्ययन उपस्थित करनेवाले हैं। वर्त्तमान विभागाध्यक्ष आचार्य नलिनजी भी भक्त कवि लालचदास के दो प्राप्त ग्रन्थों – 'हरिचरित' और 'विष्णुपुराण' तथा बिहार के सूफी कवि शेख किफायतुल्ला के प्रेमाख्यान काव्य 'विद्याधर' का अनुशीलन कर रहे हैं। इन दोनों बिहारी कवियों पर आपके गवेषणात्मक निबन्ध तथा आपके द्वारा सम्पादित पाठान्तर-सहित मूल ग्रन्थ त्रैमासिक 'साहित्य' में प्रकाशित हो रहे हैं। आशा है कि परिषद् के इस विभाग का उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ ग्रन्थ-संग्रह हिन्दी-साहित्य के शोधकार्य को निरन्तर प्रगतिशील बनाता रहेगा। हमें विश्वास है कि इस विभाग के अध्यक्ष के तत्त्वावधान में उपर्युक्त अनुसन्धायक-द्वय जैसी लगन से काम कर रहे हैं, उससे भविष्य में अधिकाधिक शोध-सामग्री हिन्दी-जगत् को प्राप्त होगी।

श्रीकृष्णजन्माष्टमी,
शकाब्द १८८१

शिवपूजनसहाय
संचालक

विषयानुक्रम

बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद् में संगृहीत हिन्दी की प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण (सम्पादकीय)	... ...	१–४
निर्गुण भक्ति-काव्य	... ...	१–६
भक्ति-काव्य	... ...	६–३०
काव्य	... ...	३०–३४
स्फुट-काव्य	... ...	३४–३५
चरित-काव्य	... ...	३५–३६
काव्य-शास्त्र	... ...	३६–३८
छन्द-शास्त्र	... ...	३८
ज्यौतिष	... ...	३८–३६
दर्शन	... ...	३६
कामशास्त्र	... ...	३६–४०
कोष	... ...	४०
धर्म	... ...	४०
धर्मशास्त्र	... ...	४०–४१
स्तोत्र	... ...	४१–४२
इतिहास	... ...	४२
तन्त्र	... ...	४२–४३
चिकित्सा	... ...	४३
कथा	... ...	४३–४४
गीति-नाट्य	... ...	४४
उपन्यास	... ...	४४
जीवन-चरित्र	... ...	४४
भूगोल	... ...	४४
पत्र	... ...	४४
परिशिष्ट—१ अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ	... ...	४७–५०
परिशिष्ट—२ ग्रन्थों की अनुक्रमणिका	... ...	५१–५५
ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका	... ...	५६–५८
परिशिष्ट—३ विक्रम-शताब्दी के अनुसार ग्रन्थों के रचनाकाल और लिपिकाल		५६
परिशिष्ट—४ महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों का समय तथा अन्य प्रकाशित खोज-विवरणों में उनके उल्लेख का विवरण	...	६०

संकेत-विवरण

ई०—	ईसवी
वि०—	विक्रमाब्द
फ०—	फसली सन्
आ०—	आकार
सं०—	संख्या
ग्रं०—	ग्रन्थकार
र० का० —	रचनाकाल
लि० का०—	लिपिकाल
दे०—	देखिए
खो० वि०—	खोज-विवरण
ना० प्र० स० का०—	नागरी-प्रचारणी सभा, काशी
ग्रं० सं०—	ग्रन्थ-संख्या
पृ० सं०—	पृष्ठ-संख्या
बि० रा० भा० प०—	बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
स० सं०—	सरोज-संख्या

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् में संगृहीत हिन्दी की प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण

सम्पादक : प्रो० नलिनविलोचन शर्मा

शोध-सहायक : श्रीरामनारायण शास्त्री : श्रीदामोदर मिश्र

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् का प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ-शोध-विभाग, पोथियों के संग्रह आदि के अतिरिक्त, सन् १९५१ ई० के फरवरी मास से प्राचीन हस्तलिखित पोथियों के विवरण के प्रस्तुतीकरण में संलग्न रहा है। मार्च, १९५८ ई० तक की खोज के परिणामस्वरूप विभाग में ३२७३ प्राचीन हस्तलिखित पोथियाँ संगृहीत हो चुकी हैं, जिनमें संस्कृत की प्रायः २५८५; हिन्दी की ५९३; बँगला और गुरुमुखी-लिपियों में क्रमशः ५ और ३ पोथियाँ हैं। इनमें से १५१ हस्तलिखित पोथियों (हिन्दी १००, संस्कृत ५१) के विवरण तथा उनके रचयिताओं के संक्षिप्त परिचय 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (प्रथम खण्ड) में प्रकाशित हो चुके हैं। दूसरे खण्ड में मन्नूलाल पुस्तकालय (गया) की १०६ और चैतन्य-पुस्तकालय (गायघाट, पटनासिटी) की २१ पोथियों के विवरण प्रकाशित हैं। इनके अतिरिक्त हिन्दी की ५० हस्तलिखित पोथियों के विवरण त्रैमासिक 'साहित्य' में क्रमशः प्रकाशित हुए हैं जिन्हें तीसरे खण्ड के रूप में प्रकाशित किया जायगा।

संस्कृत की संगृहीत समस्त पोथियों के विवरण भी तैयार हैं। उनमें से विशेष महत्त्वपूर्ण पोथियों के विवरण ही सम्प्रति प्रकाशित किये जायेंगे।

'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' के प्रस्तुत खण्ड में परिषद् के शोध-विभाग में संगृहीत १०२ ज्ञात ग्रन्थकारों की ३२७ हस्तलिखित हिन्दी-पोथियों के विवरण हैं। इनके अतिरिक्त अज्ञात ग्रन्थकारों की ६२ हिन्दी-पोथियों के विवरण भी हैं। इनमें ऐसे ८१ नये ग्रन्थकार हैं, जिनका उल्लेख परिषद् द्वारा पूर्व-प्रकाशित विवरणों में नहीं है। यहाँ पाद-टिप्पणियों में यथास्थान उनके सम्बन्ध में ज्ञात सूचनाएँ उद्धृत कर दी गई हैं। निम्नलिखित नवोपलब्ध सत्रह ग्रन्थकारों का सविशेष उल्लेख असमीचीन नहीं होगा—

१. कान्हजी सहाय—कवि घनारंग के समकालीन; शाहाबाद जिला-निवासी; अट्ठारहवीं शती में वर्त्तमान; भक्तकवि; सङ्गीत के साधक। ये कीर्त्तन करते थे और स्वरचित गीतों को गाते हुए आनन्द-विभोर हो जाते थे। इनके सम्बन्ध की सूचनाएँ घनारंगजी के वंशज श्रीसहदेव मल्लिक, धनगाईं (सूर्यपुरा, शाहाबाद)-निवासी से प्राप्त हुई हैं।

२. गोपालजी लाल—कवि बच्चू मल्लिक के समकालीन; सङ्गीतज्ञ कवि; डुमराँव-महाराज के आश्रित। स्फुट रचनाएँ तथा गीत मिलते हैं।

३. गोस्वामी गोवर्धनलाल—गोस्वामी हितहरिवंश के वंशज; हितहरिवंश बापी-भवन (साँवलियाजी का मन्दिर, लल्लूबाबू का कूचा, पटनासिटी) के अधिष्ठाता; 'प्रेम-प्रभा' के रचयिता; 'कविचूडामणि' उपाधि; 'प्रेम-पुष्प' नाम की पत्रिका के सम्पादक, चौदह भाषाओं के ज्ञाता।

४. घनारंग—डुमराँव-महाराज महेश्वरबख्शसिंह के आश्रित; बच्चू मल्लिक के पितृव्य; धनगाईं-निवासी; उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध में वर्त्तमान; कृष्णभक्त कवि; कृष्ण-रामायण और व्रज-विलास के रचयिता। कहा जाता है, ये अपनी रचनाएँ दीवार पर लिख दिया करते थे, और इनके भ्रातृज बच्चू मल्लिक उसे बाद में कागज पर लिख लेते थे। इनके रचे अनेक गीत शाहाबाद में आज भी गाये जाते हैं।

५. जैरामदास—शाहाबाद जिलान्तर्गत जोगिया (काथ के निकट) ग्राम-निवासी; वसन पाण्डेय के पुत्र; सरयूपारीण ब्राह्मण; अट्ठारहवीं शती में वर्त्तमान; बराँव पहाड़ी पर इनका चरण-चिह्न अङ्कित है, जिसकी पूजा होती है तथा वर्ष में एक बार मेला लगता है। इनकी चौबीस रचनाएँ खोज में मिली हैं। सन्त कवि रघुनाथदास, सीतारामदास और हनुमानसरनदास इनके वंशज थे। सहसराम के श्रीराधारमण शर्मा, वकील इनके जीवित वंशज हैं। इनके दो पुत्रियाँ थीं, जो इनके रचे ग्रन्थों को लिपिबद्ध किया करती थीं। इनकी रचनाओं के अन्त में निम्नोद्धृत पंक्तियाँ समान रूप से मिलती हैं—

'वैदेही दस्तखत कियो सन्मुख पवनकुमार।
जैराम की नन्दिनी भव-जल उतरो पार॥'

कहा जाता है, पकड़ी का वह वृक्ष आज भी है, जिसके नीचे बैठकर ये योग तथा

साहित्य की साधना करते थे। इनके सम्बन्ध की अनेक किंवदन्तियाँ उक्त क्षेत्र में प्रचलित हैं।

६. तुलाराम—बेतिया-राज्य के आश्रित कवि; प्रसिद्ध केशवदास के समकालीन; कहा जाता है, केशवदास से इनकी मित्रता थी। चम्पारन जिला (बँगरी ग्राम)-निवासी श्रीगणेश चौबे से ज्ञात हुआ है कि जीवनान्त में ये कुंष्ठ रोग से ग्रस्त हो गये थे, उसी समय इन्होंने सूर्यस्तुतिपरक ग्रन्थ रचे थे।

७. देवीदास—रामगढ़ के राजा दलेल सिंह के आश्रित; पदुमनदास के समकालीन; जाति के अम्बष्ठ कायस्थ; पाण्डव-चरितार्णव के रचयिता।

८. दिगम्बर दूबे—शाहाबाद जिला-निवासी; डुमराँव-महाराज राधाप्रसादसिंह के राजकवि; घनारंग तथा बच्चू मल्लिक के समकालीन; उन्नीसवीं शती के अन्त में वर्त्तमान; स्फुट गीतों के रचयिता।

९. बच्चू मल्लिक—घनारंग के भ्रातृज; डुमराँव-राज्य के आश्रित सङ्गीतज्ञ कवि; उन्नीसवीं शती के अन्त में वर्त्तमान; अपने समय के भारत-विख्यात गायक घनारंग के समकालीन; ब्राह्मण; रस-प्रकाश, भैरव-प्रकाश, स्वर-प्रकाश आदि ग्रन्थों के रचयिता; प्रकाशित कृति—कृष्ण-चरित; अनेक रचनाएँ अप्रकाशित हैं; इनके अनेक गीत सूर्यपुरा और डुमराँव के समीपस्थ क्षेत्रों में आज भी गाये जाते हैं।

१०. बेनीराम—हजारीबाग जिलान्तर्गत ईचाक-ग्राम-निवासी; रामगढ़-राज्य के आश्रित कवि; अट्ठारहवीं शती के अन्त में वर्त्तमान।

११. भिनकराम—सरभङ्ग-सम्प्रदाय के सन्त; उक्त सम्प्रदाय की एक शाखा के प्रवर्त्तक; सरभङ्ग-सम्प्रदाय पर डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री-लिखित पुस्तक परिषद् से शीघ्र ही प्रकाशित होगी।

१२. मधुकवि—छपरा जिलान्तर्गत पलुई-ग्राम-निवासी, लगभग सत्रह ग्रन्थों के रचयिता; जन्म १९१७ वि०; मृत्यु २००५ वि०।

१३. महादेव हलवाई—शाहाबाद जिला-निवासी; कान्हजीसहाय के शिष्य; गीतकार और गायक; डुमराँव-महाराज राधाप्रसादसिंह के आश्रित। इनके स्फुट गीत खोज में मिले हैं।

१४. मुकुट दूबे—बच्चू मल्लिक के समकालीन; डुमराँव-राज्य के आश्रित; स्फुट गीतों के रचयिता।

१५. रघुवीर नारायण—नयागाँव, सारन, के निवासी; बनैली-महाराज कीर्त्यानन्द सिंह के आश्रित; अँगरेजी, हिन्दी और भोजपुरी के प्रसिद्ध कवि; जन्म १८८४ ई०; मृत्यु १९५५ ई०। इनकी समस्त प्राप्य कृतियाँ तथा हस्तलेख बिहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अनुशीलन-विभाग में संगृहीत हैं।

१६. लक्ष्मीसखी—अमनौर, सारन-निवासी; सखी-सम्प्रदाय के अनुयायी; सं० १९७० वि० में वर्त्तमान; मृत्यु १९१४ ई०।

१७. शिवकुमार शास्त्री—भभुआ, शाहाबाद-निवासी; १९७० वि० के लगभग वर्त्तमान; पद्यमय वीर अर्जुन के रचयिता; कुँवरसिंह पर संस्कृत-महाकाव्य (अप्रकाशित) भी इनकी रचना है, जो परिषद् में संगृहीत है।

परिषद् के द्वारा प्रकाशित 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (दो खण्ड) में यथासम्भव विस्तार के साथ पोथियों के विवरण दिये गये हैं। मैंने इसके विपरीत यही उपादेय समझा है कि परिषद् के प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ-शोध-विभाग में संगृहीत सभी हिन्दी-पोथियों के संक्षिप्त, किन्तु सारगर्भ विवरण अविलम्ब प्रस्तुत किये जायँ। इनमें जो विशेष महत्त्व के हैं, उनके पाठ-सम्पादन तथा सविस्तर अध्ययन की योजना भी बनाई गई है और कार्यारम्भ हो चुका है। इसी योजना के अन्तर्गत लालचदास तथा अद्यावधि अज्ञात सूफी कवि किफायत पर विभाग में कार्य हो रहा है। पहले की कृति, हरिचरित, के सम्पादित पाठ का एक अंश और दूसरे का परिचय 'साहित्य' के प्रस्तुत अङ्क में दिये जा रहे हैं।

जिन पाण्डुलिपियों के ग्रन्थकार अज्ञात हैं अथवा खण्डित अवस्था में प्राप्त होने के कारण जो पाण्डुलिपियाँ विवरण-सापेक्ष हैं, उनके सम्बन्ध में परिषद् का हस्तलिखित ग्रन्थानुसन्धान-विभाग सूचनाओं का स्वागत करेगा।

जिन उदार विद्यानुरागियों से परिषद् को दुर्लभ पोथियाँ प्राप्त हुई हैं, उनके प्रति हम परिषद् की ओर से कृतज्ञता-ज्ञापन करते हैं। हमें आशा है, राज्य के साहित्यप्रेमी प्राध्यापक, शिक्षक, सरकारी पदाधिकारी, छात्र तथा अन्य कार्यों में संलग्न व्यक्ति भी, अपना कर्त्तव्य समझकर, प्राचीन पोथियों के संग्रह और सुरक्षा में परिषद् की सहायता करेंगे।

पाण्डुलिपियों के संग्रह, वर्गीकरण, विवरण-लेखन आदि कार्यों में परिषद् के विभागीय शोध-सहायक श्रीरामनारायण शास्त्री ने उत्साह, तत्परता और योग्यता का परिचय दिया है। विभाग के दूसरे शोध-सहायक श्रीदामोदर मिश्र ने परिश्रम तथा योग्यता के साथ इन कामों में हाथ बँटाया है।

०

निर्गुण भक्ति-काव्य

१५१—गोरख गोष्ठी । ग्रन्थकार—कबीरदास । लिपिकार— × । रचनाकाल—प्रसिद्ध । लिपिकाल— × । पत्र-संख्या—१० । दशा—खण्डित । आ०—६·९" × ५·२" । लिपि—नागरी ।

१५२—जंजीरा । ग्रं०—कबीरदास । लि०— × । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०— × । पत्र-सं०—१९ । दशा—खण्डित । आ०—६·९" × ५·२" । लिपि—नागरी ।

१५३—पुण्य महातम । ग्रं०—कबीरदास । लि०—गोविन्ददास । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१२८४ फ० = १९३३ वि० । पत्र-सं०—२० । दशा—पूर्ण । आकार—६·१४" × ४·८" । लिपि—नागरी ।

१५४—सरौदे। ग्रं०—कबीरदास। लि०—गरभूदास। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१९५६ वि०। पत्र-सं०—१८। दशा—पूर्ण। आकार—८·७"×६·१२"। लिपि—नागरी।

१५५—बीजक। ग्रं०—कबीरदास। लि०—गोपालदास। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१२६१ फ० = १९४० वि०। पत्र-सं०—२००। दशा—पूर्ण। आ०—६"×४"। लिपि—नागरी।

१५६—बीजक रमैनी। ग्रं०—कबीरदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—२०। दशा—पूर्ण। आ०—९·९"×४·४"। लिपि—नागरी।

१५७—साखी। ग्रं०—कबीरदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१२७५ फ० = १९२४ वि०। पत्र-सं०—८३। दशा—खण्डित, जीर्ण। आ०—१०"×४.१३"। लिपि—कैथी।

१५८—पंचमुद्रा। ग्रं०—कबीरदास। लि०—गरभूदास। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१९६६ वि०। पत्र-सं—५७। दशा—पूर्ण। आ०—८.८"×६.१२"। लिपि—नागरी।

१५९—निर्भयज्ञान। ग्रं०—कबीरदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—२६। दशा—खण्डित, जीर्ण। आ०—७·५"×५"। लिपि—कैथी।

१६०—(क) हनुमानबोध, (ख) निरंजनागोष्ठी, (ग) मूलग्यान। ग्रं०—कबीरदास। लि०—गंगाभगत। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१९०० वि०। पत्र-सं०—९१। दशा—पूर्ण। आ०—५·४"×३·१०"। लिपि—कैथी।

१६१—(क) कबीरगोष्ठी, (ख) जंगी समाज, (ग) सरबंग सागर। ग्रं०—कबीरदास। लि०—गंगाभगत। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१९०१ वि०। पत्र-सं०—१०६। दशा—पूर्ण। आ०—५·४"×३·१२"। लिपि—कैथी।

१६२—(क) ग्यान सागर, (ख) धरमदास बोध, (ग) कबीर गोरख गोष्ठी, (घ) सेख तकी के गोष्ठी। ग्रं०—कबीरदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१२६१ फ० = १९१० वि०। पत्र-सं०—९१। दशा—पूर्ण। आ०—८·८"×५·४"। लिपि—कैथी।

१६३—लोकपांजी (कबीर और धर्मदास की गोष्ठी)। ग्रं०—कबीरदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—२३। दशा—पूर्ण। आ०—६·१२"×४·८"। लिपि—नागरी।

१६४—गरभावली (गोरख और कबीर की गोष्ठी)। ग्रं०—कबीरदास। लि०—मोहनदास। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१९३४ वि०। पत्र-सं०—४२। दशा—पूर्ण। आ०—६·१२"×४·८"। लिपि—नागरी।

१६५—कबीर के भक्तिमाल की टीका (?)। ग्रं०—कबीरदास। लि०—हरगोविन्द-

दास। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१६३६ वि०। पत्र-सं०—६। दशा—पूर्ण। आ०—६·६"×४"। लिपि—नागरी।

१६६—तीनो वानी। ग्रं०—शिवनारायण दास[1]। लि०—×। र० का०—×। पत्र-सं०—१४। दशा—पूर्ण। आ०—७·१२"×६·३"। लिपि—नागरी।

१६७—गादी विलास। ग्रं०—शिवनारायणदास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—४। दशा—पूर्ण। आ०—७·१२"×६·३"। लिपि—नागरी।

१६८—शब्द। ग्रं०—शिवनारायण दास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२३। दशा—पूर्ण। आ०—७·११"×६·२"। लिपि—नागरी।

१६९—संत सरन। ग्रं०—शिवनारायणदास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र सं०—२। दशा—खण्डित। आ०—७·९"×६"। लिपि—नागरी।

१७०—संत सुंदर। ग्रं०—शिवनारायणदास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—४०। दशा—पूर्ण। आ०—७·१२"×६·३"। लिपि—नागरी।

१७१—(क) संत सरन, (ख) संत विलास, (ग) संत सुंदर। ग्रं०—शिवनारायण दास। लि० - ×। र० का०—×। लि० का०—१८११ वि०। पत्र-सं०—१३४। दशा—खण्डित। आ०—८·६"×६·६"। लिपि—नागरी।

१७२—दरियासागर। ग्रं०—दरियादास। लि०—ठाकुरदास। र० का०—×। लि० का०—१९०३ वि०। पत्र-सं०—८४। दशा—खण्डित। आ०—८"×६·४"। लिपि—नागरी।

१७३—ज्ञानदीपक। ग्रं०—दरियादास। लि०—बोधिदास। र० का०—×। लि० का०—१९६९ वि०। पत्र-सं०—१५६। दशा—पूर्ण। आ०—९·८"×६·२"। लिपि—नागरी।

१७४—ज्ञानदीपक। ग्रं०—दरियादास। लि०—बलिरामदास। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१३४। दशा—पूर्ण। आ०—९·४×६"। लिपि—नागरी।

१७५—प्रेममूला—ग्रं०—दरियादास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२८। दशा—खण्डित। आ०—८"×६·८"। लिपि—नागरी।

१७६—प्रेममूला—ग्रं०—दरियादास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—३। दशा—खण्डित। आ०—७"×५·४"। लिपि—नागरी।

१७७—ज्ञानमूला—ग्रं०—दरियादास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—३०। दशा—खण्डित। आ०—८"×६·८"। लिपि—नागरी।

1—शिवनारायणी मत के प्रवर्त्तक; गाजीपुर जिला-निवासी; सं० १७९२=१८११ ई० के लगभग वर्त्तमान; नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी इनकी रचना खोज में मिली है। दे०—खो० वि० १९०९-११, ग्रं० सं० २९४ ए०, बी० सी० डी० और ई०।

१७८—ब्रह्मविवेक—ग्रं०—दरियादास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—५। दशा—खण्डित। आ०—७"×५"। लिपि—नागरी।

१७९—ब्रह्मविवेक। ग्रं०—दरियादास[1]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—३२। दशा—पूर्ण। आ०—८·११"×६·२"। लिपि—नागरी।

१८०—निरनैसार। ग्रं०—पूरनसाहब[2]। लि०—हरगोविन्ददास। र० का०—×। लि० का०—१२९४ फ० = १९४३ वि०। पत्र-सं०—५७। दशा—पूर्ण। आ०—६·६"×४"। लिपि—नागरी।

१८१—ज्ञानगोष्ठी। ग्रं०—गोरखनाथ[3]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२। दशा—पूर्ण। आ०—११"×५·८"। लिपि—नागरी।

१८२—ज्ञानस्वरोदय। ग्रं०—चरनदास[4]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—१९२४ वि०। पत्र-सं०—२१। दशा—पूर्ण। आ०—६·६"×५·२"। लिपि—नागरी।

१८३—ज्ञानस्वरोदय। ग्रं०—चरनदास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—१८९३ वि०। पत्र-सं०—८। दशा—पूर्ण। आ०—८"×६"। लिपि—नागरी।

१८४—कवित्त रामायण और कुण्डलिया[5]। ग्रं०—पलटूदास[6]। लि०—जगरूपदास। र० का०—×। लि० का०—१३१४ फ० = १९६३ वि०। पत्र-सं०—५९ (अन्य रचनाएँ ६१ पृष्ठों में)। दशा—खण्डित। आ०—८"×४·१२" लिपि—नागरी।

१—शाहाबाद (बिहार)-निवासी; जन्म—१७३१ वि०; मृत्यु १८३७ वि०; पीरनशाह के पुत्र; दरियापन्थ के प्रवर्त्तक।

२—इस नाम के दो कबीरपन्थी साधु हो चुके हैं। दोनों का रचना-काल सं० १८८५ और १८९४ वि० है। एक खेड़ाया के महन्थ थे और दूसरे नगम्फरिया-निवासी बुरहानपुर के महन्थ के शिष्य थे। दे०—नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) का खोज-विवरण १९०१, ग्रं० सं० ६५ और १९०६, ग्रं० सं० २०९।

३—गोरखपन्थी सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक; सं० १४०७ वि० के लगभग वर्त्तमान।

४—सुखदेव के शिष्य; दहरा (अलवर, राजपूताना)-निवासी; जाति के धूसरबनिया; सं० १७६० वि० के लगभग वर्त्तमान। दे०—का० ना० प्र० सभा का हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण (पहला भाग), पृ० सं० ४३।

५—इस जिल्द में कबीरदास (फगुआ), तुलसीदास (होली) के स्फुट पद तथा नवोपलब्ध कवि हरप्रसाद, दरसनराम, शंकरदास के कवित्त आदि हैं और बोधिदास का झूलना (१३ पृष्ठ तथा ६६ पद) भी है।

६—कबीर-पन्थ के अनुयायी; अयोध्या-निवासी; अट्ठारहवीं शती में वर्त्तमान।

१८५—भक्ति जैमाल । ग्रं०—शिवाराम[1] । लि०—×। र० का०—× । लि० का०—× । (सरभङ्ग-सम्प्रदाय) । पत्र-सं०—२६६ । दशा—खण्डित । आ०—१२" × ६" । लिपि-नागरी ।

१८६—भक्ति जैमाल । ग्रं०—शिवाराम । लि०—रामनाथ । र० का०—× । लि० का०—१८६२ वि० । (सरभङ्ग-सम्प्रदाय) । पत्र-सं०—४६४ । दशा—खण्डित । आ०—६"×६·६" । लिपि—नागरी ।

१८७—विवेकसार । ग्रं०—किनाराम[2] । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—१८७७—वि० । पत्र-सं०—३३ । दशा—पूर्ण । आ०—१०"×४" । लिपि—नागरी ।

१८८—विचारमाला । ग्रं०—अनाथदास[3] । लि०—× । र० का०—१७०६ वि० । लि० का०—१८६६ वि० । पत्र-सं०—१२ । दशा—पूर्ण । आ०—१०·१०"×५·४" । लिपि—नागरी ।

१८९—सहज प्रकाश । ग्रं०—सहजो बाई[4] (चरनदास की शिष्या) लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—१० । दशा—खण्डित । आ०—८·८"×५·४" । लिपि—नागरी ।

१९०—सत्तनाम । ग्रं०— भिनकराम[5] । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं० —१८ । दशा—पूर्ण । आ०—६·४"×५" । लिपि—कैथी ।

१९१—निरगुन । ग्रं०—गोपालजी लाल । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—३ । दशा—खण्डित । आ०—८·१०"×६·६" । लिपि—कैथी ।

१९२—सारविवेक । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—१७ । दशा—खण्डित । आ०—७·१०" × ५" । लिपि—कैथी ।

१९३—भजन निर्गुन[6] । ग्रं०—× । लि०—सन्तपति साहेब । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—२५ । दशा—खण्डित । आ०—७·११"×६·१०" । लिपि—कैथी ।

१—सरभङ्ग-सम्प्रदाय के सन्त; काशी-निवासी; सं० १७८७ के लगभग वर्त्तमान ।

२—रामनगर (वाराणसी)-निवासी; रामरसाल के ग्रन्थकार; सरभङ्ग-मत के साधु । काशी के शिवाला-घाट में इनका मठ प्रसिद्ध है । गोसाइँ नाम से इनके सम्बन्ध की अनेक किंवदन्तियाँ उक्त क्षेत्र में प्रचलित हैं ।

३—सं० १७२६ के लगभग वर्त्तमान; मौनीबाबा के शिष्य; 'जन अनाथ' नाम से प्रसिद्ध; नागरी-प्रचारिणी-सभा (काशी) को भी इनकी रचना खोज में मिली है । दे०—खो० वि० १९०६-८, ग्र० सं० १२९ ए० और बी० ।

४—स्वामी चरनदास की शिष्या, सं० १८०० के लगभग वर्त्तमान; परीक्षितपुर (दिल्ली)-निवासिनी ।

५—चम्पारन (बिहार)-निवासी; सरभङ्ग-सन्त; सरभङ्ग-सम्प्रदाय के एक विशेष शाखा के प्रवर्त्तक ।

६—कबीरदास, तुलसीदास तथा सरभङ्ग-सन्तों के स्फुट पदों का संग्रह । आधुनिक लेख ।

१९४—धर्मसंवाद। ग्रं०—×। लि०—रामचन्द्र तिवारी। र० का०—×। लि० का०—१९२६ वि०। पत्र-सं०—३१। दशा—पूर्ण। आ०—८·७" × ५·४"। लिपि—नागरी।

१९५—सिद्धान्तसार। ग्रं०—रामप्रसाद दास[1]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१५। दशा—खण्डित। आ०—६·७" × ५"। लिपि—नागरी।

१९६—सतगुरु के लक्षण (गद्य में)। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—४। दशा—पूर्ण। आ०—८·१७" × ५·८"। लिपि—नागरी।

भक्ति-काव्य

१९७—रामचरित मानस। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—बिक्कूलाल। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१९२२ वि०। पत्र-सं०—३२२। दशा—पूर्ण। आ०—११·१२"×९"। लिपि—नागरी।

१९८—रामचरित मानस। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—फागूलाल। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८८८ वि०। पत्र-सं०—४४३। दशा—पूर्ण। आ०—९·१२" × ७·१२"। लिपि—नागरी।

१९९—रामचरित मानस। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—२६५। दशा—पूर्ण। आ०—१२"×९"। लिपि—नागरी।

२००—रामचरित मानस (बा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—गन्धर्वदास। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१९०५ वि०। पत्र-सं०—१९५। दशा—खण्डित। आ०—८·९"×६"। लिपि—नागरी।

२०१—रामचरित मानस (बा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—३६०। दशा—पूर्ण। आ०—९·२"× ६·१३"। लिपि—नागरी।

२०२—रामचरित मानस (बा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—वंशीलाल। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१९०३ वि०। पत्र-सं०—४३९। दशा—खण्डित। आ०—१०"× ६·८"। लिपि—नागरी।

२०३—रामचरित मानस (बा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—लक्ष्मणदास। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८९० वि०। पत्र-सं०—१५६। दशा—पूर्ण। आ०—११"×५·३" लिपि—नागरी।

1— कबीरपन्थी साधु; सं० १८८५ के लगभग वर्त्तमान; इनकी पाण्डुलिपियाँ नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी खोज में मिली हैं। दे०—'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (पहला भाग)—काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा।

२०४—रामचरित मानस (बा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—गुरुदयाल लाल। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१६१७ वि०। पत्र-सं०—५८। दशा—पूर्ण। आ०—१३"×८"। लिपि—नागरी।

२०५—रामचरित मानस (बा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—गजराज सिंह। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८७२ वि०। पत्र-सं०—१४६। दशा—पूर्ण। आ०—८·८"×६"। लिपि—नागरी।

२०६—रामचरित मानस (अयो० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। दशा—खण्डित।

२०७—रामचरित मानस (अयो० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—गुरुदयाल गुरुजी। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१६२२ वि०। पत्र-सं०—४६। दशा—खण्डित। आ०—१३"×८"। लिपि—नागरी।

२०८—रामचरित मानस (अर० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—गुणानन्ददास। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८७८ वि०। पत्र-सं०—२१। दशा—पूर्ण। आ०—६·६"×५·८"। लिपि—नागरी।

२०९—रामचरित मानस (अर० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—१२१। दशा—खण्डित। आ०—१०"×५·५"। लिपि—नागरी।

२१०—रामचरित मानस (अर० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—२६। दशा—खण्डित। आ०—११·१०"×६·८"। लिपि—नागरी।

२११—रामचरित मानस (कि० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—१७। दशा—पूर्ण। आ०—६"×५"। लिपि—नागरी।

२१२—रामचरित मानस (लं० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—७५। दशा—खण्डित। आ०—११·८×६·८"। लिपि—नागरी।

२१३—रामचरित मानस (सु० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—२३। दशा—खण्डित। आ०—६·१०"×४·८"। लिपि—नागरी।

२१४—रामचरित मानस (उ० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—६४। दशा—खण्डित। आ०—१०"×५" लिपि—नागरी।

२१५—रामचरित मानस (उ० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—

प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—८६। दशा—खण्डित। आ०—८"×८"। लिपि-नागरी।

२१६—रामचरित मानस (उ० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का—×। पत्र-सं०—४८। दशा—खण्डित। आ०—११·१२"×४·१०"। लिपि—नागरी।

२१७—रामचरित मानस (उ० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—किशनदयाल। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८६३ वि०। पत्र-सं०—७९। दशा—खण्डित आ०—९·८"×६·५"। लिपि—कैथी।

२१८—रामचरित मानस (उ० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—६२। दशा—खण्डित। आ०—९·१०"×४"। लिपि—नागरी।

२१९—रामचरित मानस (बा० अ० लं० उ० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—सम्मोदराम (?)। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का—१८८१ वि०। पत्र-सं—४६५। दशा—पूर्ण। आ०—९"×६"। लिपि—नागरी।

२२०—रामचरित मानस (अ० कि० सु० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—१२३। दशा—खण्डित। आ०—१२"×९"। लिपि—नागरी।

२२१—रामचरित मानस (बा० अयो० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८६९ वि०। पत्र-सं०—२००। दशा—खण्डित। आ०—१२"×८·१४" लिपि—नागरी।

२२२—रामचरित मानस (बा० अयो० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—किशनदयाल। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१९०१ वि०। पत्र-सं०—१९८। दशा—पूर्ण। आ०—९"×६"। लिपि—कैथी।

२२३—रामचरित मानस (अयो० उ० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—बलदेव दूबे। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१९१७ वि०। पत्र-सं०—२१८। दशा—खण्डित। आ०—१०·४"×७·८"। लिपि-नागरी।

२२४—रामचरित मानस (कि० सु० अ० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—महाराजसिंह। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१९०४ वि०। पत्र-सं०—८०। दशा—पूर्ण। आ०—११"×६·८"। लिपि—नागरी।

२२५—रामचरित मानस (सु० लं० उ० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—चैनन्द-सिंह। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१९४१ वि०। पत्र-सं०—२१५। दशा—पूर्ण। आ०—१२"×८·८"। लिपि—नागरी।

२२६—रामचरित मानस (अयो० अर० लं० सु० उ० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—१३३। दशा—खण्डित। आ०—१२·८"×१०·१२"। लिपि—नागरी।

२२७—रामचरित मानस। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र सं०—१०८। दशा—खण्डित। आ०—६·१०"×६·३"। लिपि—नागरी।

२२८—रामायण। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—रघुवीरदास। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१६११ वि०। पत्र-सं०—४०८। दशा—पूर्ण। आ०—१४"×७·२"। लिपि—नागरी।

२२९—रामायण (बा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—११। दशा—खण्डित। आ०—११·१२"×५·१२"। लिपि—नागरी।

२३०—रामायण (बा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८५१ वि०। पत्र-सं०—६६। दशा—खण्डित। आ०—१२"×७·८"। लिपि—नागरी।

२३१—रामायण (बा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—१३८। दशा—खण्डित। आ०—१०·१४"×६"। लिपि—नागरी।

२३२—रामायण (बा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—धुरन्धरसिंह। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८४४ वि०। पत्र-सं०—११९। दशा—पूर्ण। आ०—१०"×८"। लिपि—नागरी।

२३३—रामायण (बा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—२६। दशा—खण्डित। आ०—१०"×७"। लिपि—नागरी।

२३४—रामायण (बा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८८१ वि०। पत्र-सं०—३१। दशा—खण्डित। आ०—१२"×६"। लिपि—नागरी।

२३५—रामायण (बा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—शालिग्राम पाण्डेय। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८९२ वि०। पत्र-सं०—२४२। दशा—पूर्ण। आकार—९·१२"×५·१०"। लिपि—नागरी।

२३६—रामायण (बा० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—३६६। दशा—पूर्ण। आ०—१०·८"×६·११"। लिपि—नागरी।

२३७—रामायण (अयो० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८५५ वि०। पत्र-सं०—४७। दशा—खण्डित। आ०—१२"×५·८"। लिपि—नागरी।

२३८—रामायण (अयो० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध।

लि० का०—१६६० वि० । पत्र-सं—१०१ । दशा—पूर्ण। आ०—१२.४"×६.८" । लिपि—नागरी ।

२३९—रामायण (अयो० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—७४ । दशा—खण्डित । आ०—११.४"×५.२" । लिपि—नागरी ।

२४०—रामायण (अयो० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—राघोदास । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१८५६ वि० । पत्र-सं०—८० । दशा—पूर्ण । आ०—१०"×६" । लिपि—नागरी ।

२४१—रामायण (अर० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—आत्माराम । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१९२१ वि० । पत्र-सं०—१२ । दशा—पूर्ण । आ०—१३"×८.४" । लिपि—नागरी ।

२४२—रामायण (अर० का०) ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—३५ । दशा—खण्डित । आ०—८.८"×४.१०" । लिपि—नागरी ।

२४३—रामायण (अर० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—५ । दशा—खण्डित । आ०—१२"×५.१२" । लिपि—नागरी ।

२४४—रामायण (कि० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—गुरुदयाल । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—७ । दशा—पूर्ण । आ०—१३"×८.४" । लिपि—नागरी ।

२४५—रामायण (लं० का०) । ग्रं०—तुलसीदास। लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—९ । दशा—खण्डित । आ०—९.४"×६" । लिपि—नागरी ।

२४६—रामायण (लं० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—४५ । दशा—खण्डित । आ०—१३"×५" । लिपि—नागरी ।

२४७—रामायण (लं० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—१७ । दशा—खण्डित । आ०—१२"×६.४" । लिपि—नागरी ।

२४८—रामायण (सु० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—गुरुदयाल लाल । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१९२१ वि० । पत्र-सं०—१९ । दशा—पूर्ण। आ०—१३"×८"। लिपि—नागरी।

२४९—रामायण (सु० का०) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—राघोदास । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—१६ । दशा—खण्डित । आ०—१२.४"×६.२" । लिपि—नागरी ।

२५०—रामायण (सु० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—लोकनाथ। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१९००, वि०। पत्र-संख्या—४३। दशा—खण्डित। आ०—१०·८"×६·१०"। लिपि—नागरी।

२५१—रामायण (सु० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—२४। दशा—खण्डित। आ०—१०"×६·१४"। लिपि—नागरी।

२५२—रामायण (सु० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—२८। दशा—खण्डित। आकार—९·११"×७·२"। लिपि—नागरी।

२५३—रामायण (सु० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—१९०५ वि०। पत्र-सं०—५०। दशा—पूर्ण। आ०—७·११"×६"। लिपि—नागरी।

२५४—रामायण (उ० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—४६। दशा—खण्डित। आ०—८·१४"×६"। लिपि—नागरी।

२५५—रामायण (उ० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—गुरुदयाल। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१९२२ वि०। पत्र-सं०—२७। दशा—पूर्ण। आ०—१२"×८"। लिपि—नागरी।

२५६—रामायण (उ० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—१०। दशा—खण्डित। आ०—९·८"×४·१२"। लिपि—नागरी।

२५७—रामायण (उ० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—१४। दशा—खण्डित। आ०—१२"×६·४"। लिपि—नागरी।

२५८—रामायण (उ० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—७। दशा—खण्डित। आ०—९·१२"×४·५"। लिपि—नागरी।

२५९—रामायण (बा० अयो० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—गुरभारी पाठक। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१९०५ वि०। पत्र-सं०—२५७। दशा—खण्डित। आ०—१३·४"×१०"। लिपि—नागरी।

२६०—रामायण (अयो० अर० कि० सु० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—ठाकुरप्रसाद। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८८५ वि०। पत्र-सं०—३०५। दशा—पूर्ण। आ०—८·१२"×६·८"। लिपि—नागरी।

२६१—रामायण (लं० उ० का०)। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध।

लि० का०—× । पत्र-सं०—२०४ । दशा—खण्डित । आ०—१२"×६" । लिपि—नागरी ।

२६२—रामायण । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—२३ । दशा—खण्डित । आ०—६·३×६·२" । लिपि—कैथी ।

२६३—रामायण । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—४८७ । दशा—खण्डित । आ०—६·८"×६·३" । लिपि—नागरी ।

२६४—विनयपत्रिका (विनयपत्रिकासार नामक टीका-सहित) । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—२२८ । दशा—खण्डित । आ०—१०·३"×८·१२" । लिपि—नागरी ।

२६५—विनयपत्रिका । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—तिलकदास । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१८६६ वि० । पत्र-सं०—११७ । दशा—पूर्ण । आ०—८·१२"×६" । लिपि—नागरी ।

२६६—विनयपत्रिका । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—२४७ । दशा—खण्डित । आ०—१०·१०"×८·८" । लिपि—नागरी ।

२६७—विनयपत्रिका । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—१०० । दशा—खण्डित, जीर्ण । आ०—१०·१०"×५" । लिपि—नागरी ।

२६८—हनुमान बाहुक । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१२७५ फ० = १६२४ वि० । पत्र-सं०—१० । दशा—पूर्ण । आ०—८·६"×५·१४" । लिपि—नागरी ।

२६९—हनुमान बाहुक । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का—× । पत्र-सं०—१ । दशा—खण्डित । आ०—७·१२"×३·१०" । लिपि—नागरी ।

२७०—हनुमान बाहुक । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—१० । दशा—पूर्ण । आ०—११"×५·१२" । लिपि—नागरी ।

२७१—छप्पै रामायण । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—शिवशरणलाल । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१६३४ वि० । पत्र-सं०—५७ । दशा—पूर्ण । आ०—८·६"×५·४" । लिपि—नागरी ।

२७२—छप्पै रामायण[1] । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि०

[1]—इस जिल्द में (१) राधाकृष्ण-स्तवम (भगवानदास), (२) भजन (जगनराम), (३) सनेहलीला, (४) रामनाम महातम और गोदलीला नामक ग्रन्थ भी हैं।

का०—१६३५ वि० । पत्र-सं०—१४ । दशा—खण्डित, जीर्ण । आ०—५·१" × ४·१" । लिपि—नागरी ।

२७३—छप्पै रामायण । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—शिवशरणलाल खत्री । र० का—प्रसिद्ध । लि० का०—१६४४ वि० । पत्र-सं०—१४ । दशा—पूर्ण । आ०—८·७"×५·७" । लिपि—नागरी ।

२७४—छप्पै रामायण । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—२६ । दशा—पूर्ण । आ०—६·७"×४·४" । लिपि—नागरी ।

२७५—गीतावली । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—१४ । दशा—खण्डित । आ०—८" × ५·८" । लिपि—नागरी ।

२७६—गीतावली । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—गोविन्ददास । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१६०५ वि० । पत्र-सं०—६६ । दशा—पूर्ण । आ०—११"×४·८" । लिपि—नागरी ।

२७७—कवित्त रामायण । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—हीरामणि मिश्र । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१८६६ वि० । पत्र-सं०—४६ । दशा—पूर्ण । आ०—११·१२" × ४" । लिपि—नागरी ।

२७८—कवित्त रामायण । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—शालिग्राम पाण्डेय । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१६०८ वि० । पत्र-सं०—५२ । दशा—खण्डित । आ०—१०·८"×४·१२" । लिपि—नागरी ।

२७६—रामगीतावली । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१८७६ वि० । पत्र-सं०—६६ । दशा—खण्डित । आ०—६·४" × ६" । लिपिं—नागरी ।

२८०—रामलला नहछू । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—लाला जगन्नाथसिंह । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१८५७ ई० । पत्र-सं०—५ । दशा—पूर्ण । आ०—७·८"×५·१२" । लिपि—नागरी ।

२८१—कृष्णगीतावली । ग्रं०—तुलसीदास । लि० का०—× । र० का०—प्रसिद्ध । पत्र-सं०—११ । दशा—खण्डित । आ०—१२·६"×६·४" । लिपि—नागरी ।

२८२—कवितावली । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । दशा—खण्डित ।

२८३—तुलसी सतसई । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—चेतनराम । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१६०६ वि० । पत्र-सं०—२८ । दशा—पूर्ण । आ०—६·६"×७·१०" । लिपि—नागरी ।

२८४—वैराग्यसंदीपनी । ग्रं०—तुलसीदास । लि०—हरिदास । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—५ । दशा—पूर्ण । आ०—१०·११" × ५·१२" । लिपि—नागरी ।

२८५—वैराग्यसंदीपनी। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—६। दशा—पूर्ण। आ०—८·१०"×४·८"। लिपि—नागरी।

२८६—भरथविलाप। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—शीतलदास। र० का०—प्रसिद्ध। लि०का०—१९११ वि०। पत्र-सं०—१०। दशा—पूर्ण। आ०—९·४"×६·१२"। लिपि—नागरी।

२८७—भरथविलाप। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—लाला जगन्नाथसिंह। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८५७ ई०। पत्र-सं०—२४। दशा—पूर्ण। आ०—७·८"×५·१२"। लिपि—नागरी।

२८८—भरथविलाप। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—कनिकलाल। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१२७५ फ० = १९२४ वि०। पत्र-सं०—२७। दशा—पूर्ण। आ०—७·४"×६"। लिपि—नागरी।

२८९—रामसतसई। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८८२ वि०। पत्र-सं०—१०५। दशा—खण्डित। आ०—६·४"×४·८"। लिपि—नागरी।

२९०—मीनगीता। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—५। दशा—पूर्ण। आ०—१२·८"×५·३"। लिपि—नागरी।

२९१—दोहावली। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—×। र० का—प्रसिद्ध। लि० का०—१९९६ वि०। पत्र-सं०—३६। दशा—पूर्ण। आ०—१२·४"×४·८"। लिपि—नागरी।

२९२—बिसाती लीला। ग्रं०—प्रेमदास[1]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—१९३५ वि०। पत्र-सं०—१५। दशा—पूर्ण। आ०—५"×४·२"। लिपि—नागरी।

२९३—जैमिनी पुराण। ग्रं०—प्रेमदास[2]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१८०। दशा—खण्डित। आ०—१०"×६·४"। लिपि—नागरी।

२९४—जैमिनी पुराण। ग्रं०—प्रेमदास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×।

१—स्वामी रामानुज के अनुयायी; प्रेम-परिचय, भगवत बिहार-लीला और बिसातिन लीला के ग्रन्थकार; अजयगढ़-निवासी; सं० १८२७ के लगभग वर्त्तमान; श्रीकृष्णलीला के लेखक प्रेमदास से भिन्न; इनकी पाण्डुलिपियाँ नागरी-प्रचारिणी-सभा (काशी) को भी खोज में मिली हैं।—दे० खो० वि० १९०९-११, ग्रं०—२२९ ए०, बी० और सी०।

२—बलिया-निवासी; हाजीपुर (बिहार)-निवासी धरणीधर पंडित के यहाँ आश्रित। दे० बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् से प्रकाशित 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण'।

पत्र-सं०— १६३ । दशा— खण्डित, जीर्ण । आ०— ६·१२" × १०·४"। लिपि—नागरी ।

२६५—शैवानन्द । ग्रं०— दर्शन शर्मा[1] । लि०— × । र० का०— १३०५ फ० = १६५४ वि० । लि० का०—× । पत्र-सं -- ६६ । दशा —पूर्ण । आ०—८·१२"×५·४" । लिपि—नागरी ।

२६६—प्रबोध पचासा । ग्रं०—दर्शन शर्मा । लि०— × । र० का०—१६५७ वि० । लि० का०— × । पत्र-सं०— ३१ । दशा—पूर्ण । आ०— ८·४" × ५" । लिपि—नागरी ।

२६७—सिद्धान्तसार पोथी । ग्रं०—रामप्रसाद । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—१६ । दशा—पूर्ण । आ० १०"×४·७" । लिपि—नागरी ।

२६८—भक्तमाल । ग्रं०—प्रियादास[2] । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—१६०८ वि० । पत्र-सं०—४ । दशा—पूर्ण । आ०—१३"×६·१२" । लिपि—नागरी ।

२६६—भक्तमाल की टीका । टीकाकार—रायनदास[3] । लि०—राघोदास । र० का०—× । लि० का०—१८६२ वि० । पत्र-सं०—२ । दशा—खण्डित । आ०—१५"×६" । लिपि—नागरी ।

३००— रास पंचावली (संगीत) । ग्रं०—घनारंग[4] । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—१५ । दशा—पूर्ण । आ०—६·८"×५·१२" । लिपि—कैथी ।

३०१—घनारंग के गीत (संगीत) । ग्रं०—घनारंग । लि० × । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—१८ । दशा - पूर्ण । आ०—११" × ६" । लिपि—नागरी ।

३०२—कृष्ण रामायण (संगीत) । ग्रं०—घनारंग । लि०— × । र० का०—× । लि० का०— × । पत्र-सं०—५६६ । दशा—खण्डित । आ०—८·४"×५" । लिपि—नागरी ।

१—नवोपलब्ध कवि; उन्नीसवीं शती में वर्त्तमान; काशी के दर्शनलाल से भिन्न ।

२—प्रसिद्ध नाभादास के शिष्य; सं० १७६७ के लगभग वर्त्तमान; रसजनिदास के गुरु और वैष्णवदास के पिता । दे० खो० वि० (का० ना० प्र० स०) १६०६—११, ग्रं० सं० ३२४ ।

३—नवोपलब्ध ग्रन्थकार; इनके सम्बन्ध की सूचना प्राप्त नहीं हुई है ।

४—शाहाबाद (बिहार) जिले के धनगाईं ग्राम-निवासी; डुमराँव-राज्य के आश्रित कवि और सङ्गीतज्ञ; अट्ठारहवीं शती में वर्त्तमान । इनके सम्बन्ध की अनेक किंवदन्तियाँ उक्त क्षेत्र में प्रचलित हैं ।

३०३—भजन संग्रह (स्फुट)। ग्रं०—घनारंग। लि०—सहदेव दूबे। र० का०—×। लि० का०—१६५४ ई०। पत्र-सं०—१७। दशा—खण्डित। आ०—८·४" × ६·८"। लिपि—नागरी।

३०४—सुन्दर विलास। ग्रं०—सुन्दरदास[1]। लि०—सर्वानन्द। र० का०—×। लि० का०—१२८१ फ० = १६३० वि०। पत्र-सं०—१३। दशा—खण्डित। आ०—६·४" × ३·१०"। लिपि—नागरी।

३०५—ज्ञानसमुद्र। ग्रं०—सुन्दरदास[2]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—३५। दशा—पूर्ण। आ०—८·१२" × ५"। लिपि—नागरी।

३०६—रज्जब की बानी। ग्रं०—रज्जब[3]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१०। दशा—खण्डित। आ०—६·४" × ४·६"। लिपि—नागरी।

३०७—सूरसागर। ग्रं०—सूरदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—१००। दशा—खण्डित। आ०—७·१२" × ६"। लिपि—नागरी।

३०८—सूरसागर। ग्रं०—सूरदास। लि०—दौलतराम। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—३७८। दशा—खण्डित। आ०—१२·४"×६·८"। लिपि—नागरी।

३०९—भक्तमाल (सटीक)। ग्रं०—नाभादास[4]। टीका—नारायणदास। लि०—हरिभक्तदास। र० का०—१७९६ वि०। लि० का०—१७९६ वि०। पत्र-सं०—५८। दशा—खण्डित। आ०—८.४" × ४"। लिपि—नागरी।

१—दादूपन्थी सन्त; सं० १७४६ वि० के लगभग वर्त्तमान; जयपुर-निवासी; खण्डेलवाल बैश्य; शाहपूरनानन्द के पुत्र। नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को इनकी लगभग बाईस रचनाएँ खोज में मिली हैं।

२—द्यौसा (जयपुर-राज्य)-निवासी; दादूजी के शिष्य; सं० १७४६ वि० के लगभग वर्त्तमान।

३—फारसी और हिन्दी के कवि; खोज में नवोपलब्ध; दोहों के सुप्रसिद्ध रचयिता के रूप में 'श्रृङ्गार-संग्रह' में इनकी चर्चा हुई है। इनका जन्म-सं० १६२४ और मृत्यु-सं० १७४६ है। दे० 'हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास' (मूल लेखक डा० ग्रियर्सन)—श्रीकिशोरीलाल गुप्त (अनुवादक), पृ० ३२०, कवि-सं० ८९८; 'शिवसिंह-सराज' की कवि-सं० ७७७।

४—अग्रदास के शिष्य; प्रियादास के गुरु; सं० १६५७ वि० के लगभग वर्त्तमान; ध्रुवदास के समकालीन। 'रामचरित्र के पद' नामक एक और इनकी रचना काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को खोज में मिली है।

३१०—गोविन्दलीलामृत । ग्रं०—दुलेलसिंह[1] । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—२६५ । दशा—खण्डित । आ०—१०"×७·१२" । लिपि—नागरी ।

३११—सिवसागर । ग्रं०—दुलेलसिंह । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—२६८ । दशा—पूर्ण । आ०—१२"×६·४" । लिपि—नागरी ।

३१२—रामजनम[2] । ग्रं०—सूरजदास[3] । लि०—सामलाल राम । र० का०—× । लि० का०—१६०२ वि० । पत्र-सं०—१२० । दशा—पूर्ण । आ०—७·८"×५·६" । लिपि—नागरी ।

३१३—रामजनम । ग्रं०—सूरजदास । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—५७ । दशा—खण्डित । आ०—७·१२"×५·८" । लिपि—नागरी ।

३१४—रामजनम । ग्रं०—सूरजदास । लि०—कनिकलाल । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं० ७३ । दशा—पूर्ण । आ०—७"×६" । लिपि—नागरी ।

३१५—रामजनम । ग्रं०—सूरजदास । लि०—शीतलदास । र० का०—× । लि० का०—१६१० वि० । पत्र-सं०—२६ । दशा—खण्डित । आ०—९·४"×६·१०" । लिपि—नागरी ।

३१६—रामजनम । ग्रं०—सूरजदास । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—४७ । दशा—खण्डित । आ०—८·४"×६·८" । लिपि—नागरी ।

३१७—रामजनम । ग्रं०—सूरजदास । लि०—लाला जगन्नाथसिंह । र० का०—× । लि० का०—१८५७ ई० । पत्र-सं०—३५ । दशा—पूर्ण । आ०—७·८"×५·१४" । लिपि—नागरी ।

३१८—अर्जुनगीता । ग्रं०—कुशलसिंह[4] । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—६३ । दशा—खण्डित । आ०—६"×५" । लिपि—नागरी ।

३१९—अर्जुनगीता । ग्रं०—कुशलसिंह । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—२६ । दशा—खण्डित । आ०—८·१०"×५·४" । लिपि—कैथी ।

१—रामगढ़-(बिहार) राज्य के राजा; पदुमनदास और देवीदास आदि अनेक कवियों के आश्रयदाता; सत्रहवीं शती में वर्त्तमान ।

२—इसी जिल्द में —(१) सीतापताल (ईश्वरदास-इसरदास), (२) रामायण-लङ्काकाण्ड (तुलसीदास), (३) भरथविलाप (तुलसीदास), (४) गोपालगारी, (५) दानलीला, (६) भरथचरित्र और (७) नागलीला भी हैं ।

३—सूरजदास बिहार के कवि हो चुके हैं । रचनाकाल अज्ञात है । इनके सम्बन्ध में अनुसन्धान हो रहा है ।

४—सं० १६७७ वि० के लगभग वर्त्तमान; फफुँद के राजा मधुकरशाह के पुत्र और कवि देवदत्त के आश्रयदाता कुशलसिंह से भिन्न ।

३२०—अर्जुनगीता। ०—कुशलसिंह। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२७। दशा—खण्डित। आ०—९"×५·४"। लिपि—नागरी।

३२१—रामरतन गीता। ग्रं०—कुशलसिंह। लि०—पदारथदास। र० का०—×। लि० का०—१९०४ वि०। पत्र-सं०—४४। दशा—खण्डित। आ०—७·१२"×६"। लिपि—नागरी।

३२२—अर्जुनगीता। ग्रं०—कुशलसिंह। लि०—शीतलदास। र० का०—×। लि० का०—१२६७ फ० = १९१६ वि०। पत्र-सं०—३९। दशा—पूर्ण। आ०—९·४"×६·१०"। लिपि—नागरी।

३२३—अद्भुत रामायण। ग्रं०—बेनीराम[१]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—९। दशा—खण्डित। आ०—१२"×४·८"। लिपि—नागरी।

३२४—दुर्गास्तव। ग्रं०—बेनीराम। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—६। दशा—खण्डित। आ०—९·४"×६·४"। लिपि—नागरी।

३२५—सीतासौरभमंजरी। ग्रं०—बेनीराम। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—८। दशा—खण्डित। आ०—१२·८"×४·१०"। लिपि—नागरी।

३२६—सीतासौरभमंजरी। ग्रं०—बेनीराम। लि०—त्रिभुवनदास। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—८८। दशा—पूर्ण। आ०—१२·१२"×७·४"। लिपि—नागरी।

३२७—सीतासौरभमंजरी। ग्रं०—बेनीराम। लि०—शुकदेव शर्मा। र० का०—×। लि० का०—१९७४ वि०। पत्र-सं०—१४८। दशा—पूर्ण। आ०—११"×६"। लिपि—नागरी।

३२८—कालीमंगलमंजरी। ग्रं०—बेनीराम। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१२५। दशा—खण्डित। आ०—११·८"×५·८"। लिपि—नागरी।

३२९—भजनावली। ग्रं०—लक्ष्मीपति[२]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—९६। दशा—खण्डित। आ०—११"×८·८"। लिपि—कैथी।

३३०—भजन संग्रह। ग्रं०—लक्ष्मीपति (?)। लि०—×। र० का०—×।

१—ईचाक (हजारीबाग, बिहार)-निवासी; अट्ठारहवीं शती के अन्त में वर्त्तमान।

२—सं० १८८३ वि० के लगभग वर्त्तमान; जोधपुर-निवासी; रागविलास और भजन-विलास नामक दो अन्य रचनाओं के ग्रन्थकार; इनकी रचनाएँ ना० प्र० स० (काशी) की भी खोज में मिली हैं। दे०—खो० वि० १९०२, ग्रं० सं०-२१, २३ और खो०-वि० १९२६—२८, ग्रं० सं० २५७ तथा पृ० सं० ५८।

लि० का०—× । पत्र-सं०—२४० । दशा—खण्डित, जीर्ण । आ०—१२"×९" । लिपि नागरी ।

३३१—सुदामाचरित । ग्रं०—हलधरदास[1] । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—४२ । दशा—खण्डित । आ०—९·१२"×७" । लिपि—नागरी ।

३३२—सुदामाचरित । ग्रं०—हलधरदास । लि०—हीरामणि मिश्र । र० का०—× । लि० का०—१७४९ शकाब्द । पत्र-सं०—४४ । दशा—पूर्ण । आ०—१२·४"×४·१२" । लिपि—नागरी ।

३३३—सुदामाचरित । ग्रं०—हलधरदास । लि०—मंगलमहाराज । र० का०—× । लि० का०—१८६७ वि० । पत्र-सं०—७२ । दशा—पूर्ण । आ०—९.६"×५·८" । लिपि—नागरी ।

३३४—हरिचरित्र । ग्रं०—लालचदास[2] । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—३७० । दशा—खण्डित । आ०—९"×६" । लिपि—नागरी ।

३३५ हरिचरित्र । ग्रं०—लालचदास । लि०—दामोदरमिश्र । र० का०—× । लि०—२०१० वि० । पत्र-सं०—४६८ । दशा—खण्डित । आ०—१३"×८·६" । लिपि—नागरी ।

३३६—हरिचरित्र । ग्रं०—लालचदास । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—७० । दशा—खण्डित । आ०—५·८"×४·२" । लिपि—नागरी ।

३३७—हरिचरित्र । ग्रं०—लालचदास । लि०—कतोहलदास (?) । र० का०—× । लि० का० १८७६ वि० । पत्र-सं०—१७५ । दशा—खण्डित । आ०—११"×६" । लिपि नागरी ।

३३८ भागवत भाषा । ग्रं०—लालचदास । लि०—दामोदरमिश्र । र० का०—१५८५ वि० । लि० का०—२०१० वि० । पत्र-सं०—१७५ । दशा—पूर्ण । आ०—१३"×८·६" । लिपि नागरी ।

३३९—भागवत । ग्रं०—लालचदास । लि० × । र० का० × । लि० का०—× । पत्र-सं०—१६ । दशा—खण्डित । आ०—९·४"×६" । लिपि—नागरी ।

३४०—साँझी । ग्रं०—गो० हितहरिवंश[3] । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध ।

१—मुजफ्फरपुर (बिहार)-निवासी; १९वीं शती के आरम्भ में वर्त्तमान । कवि पर अभी अनुसन्धान नहीं हुआ है ।

२—बरेली-निवासी; सं० १५२७ वि० के लगभग वर्त्तमान ।

३—वृन्दावन-निवासी; सं० १५८०—१६२४ वि० तक के लगभग वर्त्तमान । वैष्णवों के राधावल्लभी सम्प्रदाय के संस्थापक । दे०—'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (का० ना० प्र० सभा), प्रथम भाग ।

लि० का०—× । पत्र-सं०—३६६ । दशा—खण्डित । आ०—१०"×७"। लिपि—नागरी ।

३४१—बधाई । ग्रं०—हितहरिवंश । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—१४० । दशा—पूर्ण । आ०—६·८" × ५·२ "। लिपि—नागरी ।

३४२—चौरासी पद (सेवक बानी) । ग्रं०—हितहरिवंश । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१८५७ वि० । पत्र-सं०—१५१ । दशा—खण्डित । आ०—५·७"×३·१०" । लिपि—नागरी ।

३४३—चौरासी पद । ग्रं०—हितहरिवंश । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—१२८ । दशा—खण्डित । आ०—६·८"×३·४" । लिपि—नागरी ।

३४४—सेवक बानी (सटीक) । ग्रं०—हितहरिवंश । टीका—हरलाल गोस्वामी । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१९२० वि० । पत्र-सं०—३४८ । दशा—पूर्ण । आ०—१०·२"×६·१४" । लिपि—नागरी ।

३४५—चौरासी वार्त्ता । ग्रं०—हितहरिवंश । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—१७६ । दशा—पूर्ण । आ०—९·८"×६" । लिपि—नागरी ।

३४६—दानलीला । ग्रं०—कृष्णदास[1] । लि०—कनिकलाल । र० का०—× । लि० का०—१२७५ फ० = १९२४ वि० । पत्र-सं०—९ । दशा—पूर्ण । आ०—७·३"×६" । लिपि—नागरी ।

३४७—दानलीला । ग्रं०—कृष्णदास । लि०—लाला जगन्नाथसिंह । र० का०—× । लि० का०—१८५७ ई० । पत्र-सं०—३ । दशा—पूर्ण । आ०—७·८"×५·१४" । लिपि—नागरी ।

३४८—दानलीला । ग्रं०—कृष्णदास । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—६ । दशा—पूर्ण । आ०—९·५" × ४·३" । लिपि—नागरी ।

१—अष्टछाप के कवि; 'पयाहरी' उपनाम से प्रसिद्ध; अग्रदास के गुरु; सं० १६०७ के लगभग वर्त्तमान; ना० प्र० स० (काशी) की खोज में उपलब्ध कवि । दे० खो० वि० १९०६-८, ग्रं० सं० १२१, १२८ और खो० वि० १९०९—११, ग्रं० सं० ८१ और १०३ तथा खो० वि० १९२६—२८, ग्रं० सं० २४७, पृ० ५६ । मिश्रबन्धु ने इनका रचनाकाल १५७० के लगभग माना है। दे० मिश्रबन्धु-विनोद (पंचम संस्करण, गंगा-ग्रन्थागार, लखनऊ, २००३ वि०) पृ० १९५, कवि-सं० १२७ । ग्रियर्सन के अनुसार इनका रचनाकाल सन् १५५० है और 'सरोज' के मत से १६०१ वि० है । दे० हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास (श्रीकिशोरीलाल गुप्त), पृ० ८९ ।

३४९—रामायण (बा० का०)। ग्रं०—जैरामदास[1]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—४८। दशा—खण्डित। आ०—९·४"×४·१२"। लिपि—नागरी।

३५०—रामायण (बा० का०)। ग्रं०—जैरामदास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—४६। दशा—खण्डित। आ०—९·२"×४·१२" लिपि—नागरी।

३५१—रामायण (उ० का०)। ग्रं०—जैरामदास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—४३। दशा—खण्डित। आ०—९"×४"। लिपि—नागरी।

३५२—रामायण (सु० का०)। ग्रं०—जैरामदास। लि०—अवदानदास। र० का०—×। लि० का—१८३६ वि०। पत्र-सं—३६। दशा—पूर्ण। आ०—८"×४·३"। लिपि—नागरी।

३५३—जगन्नाथ महातम। ग्रं०—जैरामदास। लि०—चन्द्रमणि पाण्डेय। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—११५। दशा—खण्डित। आ०—८·८"×५·१०"। लिपि—नागरी।

३५४—जगन्नाथ महातम। ग्रं०—जैरामदास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१३। दशा—खण्डित। आ०—७·६"×५"। लिपि—नागरी।

३५५—कार्त्तिक महातम। ग्रं०—जैरामदास। लि०—वैदेही। र० का०—×। लि० का०—१८७० वि०। पत्र-सं०—४६। दशा—पूर्ण। आ०—८"×४·८"। लिपि—नागरी।

३५६—कर्मविपाक। ग्रं०—जैरामदास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—१८४२ वि०। पत्र-सं०—४। दशा—खण्डित। आ०—९·४"×४·१०"। लिपि—नागरी।

३५७—एकादशी महातम। ग्रं०—जैरामदास। लि०—वैदेही। र० का०—×। लि० का०—१८७७ वि०। पत्र-सं०—६१। दशा—पूर्ण। आ०—८"×४·८"। लिपि—नागरी।

३५८—महाभारत भाषा। ग्रं०—लखनसेन[2]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—७५०। दशा—खण्डित। आ०—९"×५·१२"। लिपि—नागरी।

१—जोगियाँ (शाहाबाद, बिहार)-निवासी; अट्ठारहवीं शती में वर्त्तमान।

२—नवोपलब्ध कवि; ग्रन्थकार के सम्बन्ध में अन्य खोज-विवरणिकाओं में विशेष चर्चा नहीं मिलती है। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को भी यह रचना खोज में मिली है। दे०—खो० वि० १९०९—११, ग्रं० सं० १६७।

३५९—दधिलीला। ग्रं०—परमानंददास[१]। लि०—बलभद्रप्रसाद। र० का०—×। लि० का०—१९३५ वि०। पत्र-सं०—८। दशा—खण्डित। आ०—५"×४"। लिपि—नागरी।

३६०—स्नेहलीला[२] ग्रं०—व्रजमोहन[३]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१८। दशा—पूर्ण। आ०—६"×४·८" लिपि—नागरी।

३६१—अमर फरास। ग्रं०—लक्ष्मीसखी[४]। लि०—मुरलीधर श्रीवास्तव। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—३६५। दशा—पूर्ण। आ०—१२·८"×७·८"। लिपि—नागरी।

३६२—ध्यानमंजरी। ग्रं०—अग्रदास[५]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—१८६२ वि०। पत्र-सं०—२। दशा—खण्डित। आ०—६"×४"। लिपि—नागरी।

३६३—पद्मावत। ग्रं०—मलिक मुहम्मद जायसी। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८८१ वि०। पत्र-सं०—२०८। दशा—पूर्ण। आ०—१०·८"×७"। लिपि—नागरी।

३६४—रसिकमाल। ग्रं०—उत्तमदास[६]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—१८७४ वि०। पत्र-सं०—२३८। दशा—पूर्ण। आ०—५·१२"×४·५"। लिपि—नागरी।

३६५—सेवक बानी। ग्रं०—चाचा वृन्दावनदास[७]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२। दशा—खण्डित। आ०—६·३"×४·५"। लिपि—नागरी।

१—दौदा (मुक्तसर, पंजाब)-निवासी; सं० १९३५ वि० में वर्त्तमान।

२—इस जिल्द के साथ दानलीला (कृष्णदास-रचित) की हस्तलिखित पूर्ण प्रति है।

३—जाति के ब्राह्मण; ओरछा (बुन्देलखण्ड) के राजमन्दिर के पुजारी; सं० १८५१ वि० के लगभग वर्त्तमान।

४—अमनौर (सारन, बिहार)-निवासी; सं० १९७० वि० में वर्त्तमान; सखी-मत के प्रवर्त्तक।

५—आमेर (जयपुर)-निवासी; सं० १६३२ वि० में वर्त्तमान।

६—हीरामणि मिश्र के पुत्र; सं० १७०६ वि० के लगभग वर्त्तमान। इनकी रचना काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को भी खोज में मिली है। दे० खो० वि० १९०६—८, ग्रं० सं० ३४० ए० और बी०।

७—वृन्दावन-निवासी; हितहरिवंश के अनुयायी; वल्लभ-सम्प्रदाय के वैष्णव; सं० १८०३ के लगभग वर्त्तमान।

३६६—लीला। ग्रं०—चाचा वृन्दावनदास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२८७। दशा—खण्डित, जीर्ण। आकार—९'१२"×८'१०"। लिपि—नागरी।

३६७—भागवत पद्यानुवाद। ग्रं०—शिवकुमार शास्त्री[1]। लि०—शिवकुमार शास्त्री। र० का०—२००३ वि०। लि० का०—२००३ वि०। पत्र-सं०—१५५९। दशा—पूर्ण। आ०—१०'१०"×७"। लिपि—नागरी।

३६८—करुणक्रन्दनशतक। ग्रं०—जनभगवानदास[2]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—१९६५ वि०। पत्र-सं०—८। दशा—पूर्ण। आ०—६"×४'१२"। लिपि—नागरी।

३६९- प्रेमशतक। ग्रं०—जनभगवानदास। लि०—×। र० का०—१९४७ वि०। लि० का०—×। पत्र-सं०—३३। दशा—पूर्ण। आ०—७'४"×४'१३"। लिपि—नागरी।

३७०—भक्तिसूत्रभाषा। ग्रं०—जनभगवानदास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—१९६३ वि०। पत्र-सं०—६। दशा—पूर्ण। आ०—८'७"×५'४"। लिपि—नागरी।

३७१—वन महातम[3]। ग्रं०—जनभगवानदास। लि०—धर्मनाथसिंह। र० का—१८१७ वि०। लि० का०—१९५० वि०। पत्र-सं०—२५। दशा—पूर्ण। आ०—८'६"×५'५"। लिपि—नागरी।

३७२—उत्तरांगोपकथा। ग्रं०—कवि लखनसेन। लि०—×। र० का०—१८५४ वि०। लि० का०—१८५४ वि०। पत्र-सं०—२४। दशा—पूर्ण। आ०—९"×४'३"। लिपि—नागरी।

३७३—प्रेमरतन। ग्रं०—रामानुजदास[4] (?)। लि०—श्रीधरदास। र० का०—×। लि० का०—१९१५ वि०। पत्र-सं०—४२। दशा—पूर्ण। आ०—१०'२"×६'१२"। लिपि—नागरी।

१—भभुआ (शाहाबाद, बिहार)-निवासी; जाति के कान्यकुब्ज ब्राह्मण; १९७० वि० के लगभग वर्त्तमान; पद्यमय 'वीर अर्जुन' के रचयिता; कुँवरसिंह (संस्कृत-महाकाव्य अप्रकाशित) के ग्रन्थकार।

२—नवोपलब्ध कवि; ईचाक (हजारीबाग, बिहार)-निवासी; सं० १९६३ वि० के लगभग वर्त्तमान; गदाधरसिंह के पुत्र; जाति के खत्री। विविध राग-रागिनियों में इनकी रचनाएँ हैं।

३—इसके साथ कवि की 'श्रावण-माहात्म्य' नामक रचना भी है।

४—नवोपलब्ध; उन्नीसवीं शती में वर्त्तमान और रीवाँ-नरेश महाराज रघुराजसिंह के गुरु से भिन्न: [illegible]

३७४—कृष्ण जन्म बधाई। ग्रं०—जीवनदास[1]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१८। दशा—पूर्ण। आ०—६.१२"×७.८"। लिपि—नागरी।

३७५—रामचन्द्रिका। ग्रं०—केशवदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—१६८। दशा—खण्डित। आ०—९.१२"×५.६"। लिपि—नागरी।

३७६—भैरव प्रकाश। ग्रं०—बच्चू मलिक[2]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—१८७५ ई०। पत्र-सं०—४०। दशा—पूर्ण। आ०—८.१२"×५.३"। लिपि—नागरी।

३७७—पाण्डवचरितार्णव। ग्रं०—देवीदास[3]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२००। दशा—खण्डित। आ०—१२"×६"। लिपि—नागरी।

३७८—पाण्डवचरितार्णव (२ भाग)। ग्रं०—देवीदास। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२११। दशा—पूर्ण। आ०—१२"×६"। लिपि—नागरी।

३७९—पाण्डवचरितार्णव। ग्रं०—देवीदास। लि०—त्रिभुवनदास। र० का०—×। लि० का०—१९२६ वि०। पत्र-सं०—३८४। दशा—पूर्ण। आ०—१३.८"×६.१२"। लिपि—नागरी।

३८०—गीता माहात्म्य प्रकाश लीला। ग्रं०—जगन कवि[4]। लि०—×। र० का०—१९३५ वि०। लि०का०—×। पत्र-सं०—१०। दशा—पूर्ण। आ०—८"×४.४"। लिपि—नागरी।

१—इस नाम के दो अन्य ग्रन्थकार हो चुके हैं। कवि हरसहाय के गुरु और गाजीपुर-निवासी जीवनदास का रचनाकाल सं० १८८५ वि० है तथा 'ककहरा' के ग्रन्थकार का रचनाकाल ज्ञात नहीं हो सका है। दे० ना० प्र० स० (काशी) का खो० वि० १९०९—११, ग्रं० सं० १०५ ए० और ग्रं० सं० १४१।

२—१९वीं शती में वर्त्तमान; डुमराँव-राज्य के आश्रित; सङ्गीतज्ञ कवि; घनारंग के समकालीन।

३—ईचाक (हजारीबाग, बिहार) के निवासी; पदुमनदास के समकालीन।

४ खोज में नवोपलब्ध; साधारण श्रेणी के एक 'जगन' नामक कवि १६५२ वि० में हो चुके हैं, जिनका र० का० १६८० वि० था। दे० मिश्रबन्धु-विनोद (पंचम संस्करण, गंगा-ग्रंथागार, लखनऊ) पृ० सं० ३३६ और कवि-सं० ३९८।

३८१—हरिहरकथा। ग्रं०—तुलाराम[१]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१८। दशा—खण्डित। आ०—८'१२"×३'१४"। लिपि—नागरी।

३८२—रामरक्षा। ग्रं०—रामानन्द[२]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—५। दशा—पूर्ण। आ०—७'४"×३'१४"। लिपि—नागरी।

३८३—महाभारत भाषा। ग्रं०—ललितराम[३]। लि०—दुर्गाप्रसाद। र० का०—× लि० का०—×। पत्र-सं०—७०। दशा—पूर्ण। आ०—९"×६"। लिपि—नागरी।

३८४—शिवपुराणरत्न। ग्रं०—कुंजनदास[४]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—९७४। दशा—पूर्ण। आ०—१२"×८'१२"। लिपि—नागरी।

३८५—नृसिंह चरित्र। ग्रं०—दयालदास। लि०—चन्दूलाल। र० का०—१७६८ वि०। लि० का०—×। पत्र-सं०—१२२। दशा—पूर्ण। आ०—९'८"×६"। लिपि—नागरी।

३८६—रामायणसार (रामायण की टीका)। टीका—लखनजी परमहंस। लि०—रामगेआनदास। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—३३२। दशा—खण्डित। आ०—१२'८"×९'८"। लिपि—नागरी।

१—कवि केशवदास के समकालीन; सतबरिया (चनपटिया, चम्पारन, बिहार)-निवासी; १७६० ई० के लगभग वर्त्तमान; जाति के कान्यकुब्ज ब्राह्मण; मझौली दरबार में महाराजा युगलकिशोरसिंह के आश्रित; इनकी स्मृति में बकुलहर (चम्पारन) में बूढ़ी गंडक के एक घाट का नाम 'तुलाराम घाट' है। इनके पुत्र श्रीलक्ष्मीप्रसादमिश्र एवं पौत्र श्रीमोहनदत्तमिश्र भी कवि हो चुके हैं। उपेन्द्रनाथमिश्र और कमलेशमिश्र इनके वंशज वर्त्तमान हैं। इनकी दो रचनाएँ—'हरिहरकथा' और 'तुलाराम के पत्र'—खोज में मिली हैं।

२—१८वीं शती में वर्त्तमान। दे० 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (पहला भाग), काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा।

३—नवोपलब्ध कवि; ग्रियर्सन की खोज में कवि-सं० ९१७ और शिवसिंह-सरोज-सं० ८२४। दे० ग्रियर्सन-कृत 'हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास'—श्रीकिशोरीलाल गुप्त (अनुवादक), पृ० सं० ३२२।

४—पँवार (शाहाबाद, बिहार)-निवासी; दे० बि० रा० भा० प० से प्रकाशित 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (पहला खण्ड), पृ० सं० 'म' और ग्रं० सं० २१ की टिप्पणी।

३८७—भरथ विलाप। ग्रं०—ईश्वरदास[1] (इसरदास)। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—१९०५ वि०। पत्र-सं०—१४। दशा—पूर्ण। आ०—७·१४"×६"। लिपि—नागरी।

३८८—महाभारत भाषा। ग्रं०—सबलसिंह चौहान। लि०—सूर्यगुलामसिंह। र० का०—×। लि० का०—१२८० फ० = १९२९ वि०। पत्र-सं०—२१६। दशा—पूर्ण। आ०—१०·८"×६·१०"। लिपि—नागरी।

३८९—रामचरित मानसबोध। ग्रं०—मधुकवि[2]। लि०—×। र० का०—१९९५ वि०। लि० का०—×। पत्र-सं०—१२२। दशा—पूर्ण। आ०—१०·१०" × ८·६"। लिपि—नागरी।

३९०—रामचरित मानसबोध। ग्रं०—मधुकवि। लि०—×। र० का०—२००१ वि०। लि० का०—×। पत्र-सं०—१००। दशा—पूर्ण। आ०—१३" × ८"। लिपि—नागरी।

३९१—रामचरित मानसबोध। ग्रं०—मधुकवि। लि०—×। र० का०—१९९१ वि०। लि० का०—×। पत्र-सं०—४१७। दशा—पूर्ण। आ०—१२·९" × ७·९"। लिपि—नागरी।

३९२—रामचरित मानसबोध। ग्रं०—मधुकवि। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—७७। दशा—खण्डित। आ०—८"×६·८"। लिपि—नागरी।

३९३—रामचरित मानसबोध। ग्रं०—मधुकवि। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—९६। दशा—खण्डित। आ०—८"×६·१०"। लिपि—नागरी।

३९४—रामचरित मानसबोध (उत्तरार्द्ध)। ग्रं०—मधुकवि। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—९६। दशा—खण्डित। आ०—१३·४"×८·४"। लिपि—नागरी।

३९५—रामचरितरसामृत। ग्रं०—मधुकवि। लि०—×। र० का०—१९९५ वि०। लि० का०—×। पत्र-सं०—२४०। दशा—खण्डित। आ०— १२·४"×७·१०"। लिपि—नागरी।

३९६—दुखदमन दोहावली (१ भाग)। ग्रं०—मधुकवि। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—३९। दशा—पूर्ण। आ०—८·६"×६·८"। लिपि—नागरी।

१—खोज में नवोपलब्ध प्रतीत होते हैं। रसिकसुमति के पिता, सं० १८७५ वि० में वर्त्तमान एक 'ईश्वरदास' नामक ग्रन्थकार हो चुके हैं। सम्भवतः, भरथ-विलाप के ग्रन्थकार इनसे भिन्न हैं।

२—पिलुई (सारन, बिहार)-निवासी; सं० २००५ वि० में वर्त्तमान।

३६७—दुखदमन दोहावली (२ भाग)। ग्रं०—मधुकवि। लि०—×। र० का०—१६४८ ई०। लि० का०—×। पत्र-सं०—३२। दशा—पूर्ण। आ०—८"×६·६"। लिपि—नागरी।

३६८—मोहन रामचरित। ग्रं०—मधुकवि। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२६८। दशा—पूर्ण। आ०—१३·४"×७·१०"। लिपि—नागरी।

३६६—ईश विनय। ग्रं०—कान्हजीसहाय[1]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१२। दशा—पूर्ण। आ०—११"×८·१२"। लिपि—नागरी।

४००—कान्हजी के गीत (संगीत)। ग्रं०—कान्हप्रसाद। लि०—×। र० का०—×। लि० —×। पत्र-सं०—२०। दशा—पूर्ण। आ०—८"×५"। लिपि—नागरी।

४०१—कान्हजी के गीत (संगीत)। ग्रं०—कान्हप्रसाद। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—५। दशा—खण्डित। आ०— ८"×५·६"। लिपि—नागरी।

४०२—भगवान की स्तुति। ग्रं०—शाहजहाँ[2] (बादशाह)। लि०—नरेन्द्रनारायणसिंह। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—३। दशा—पूर्ण। आ०—६·६"×४·४"। लिपि—नागरी।

४०३—गणेश महातम। ग्रं०—×। लि०—डीहू लोहार। र० का०—×। लि० का०—१२२२ फ० = १८७१ वि०। पत्र-सं०—२६। दशा—खण्डित। आ०—७·६"×५"। लिपि—नागरी।

४०४—प्रह्लाद चरित्र। ग्रं० —×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—३०। दशा—पूर्ण। आ०—६·८"×५"। लिपि—नागरी।

४०५—गुरुदेव चर्चा। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२०। दशा—खण्डित। आ०—८"×५"। लिपि—नागरी।

४०६—सूरज पुरान। ग्रं०— ×। लि०—भुलुलाल। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२५। दशा—पूर्ण। आ०—७"×६"। लिपि—नागरी।

४०७—बन्दीमोचन। ग्रं०—×। लि०—भुलुलाल। र० का०—×। लि० का०—१२८७ फ० = १६३६ वि०। पत्र-सं०—२४। दशा—पूर्ण। आ०—७"×६"। लिपि—नागरी।

४०८—सूरज पुरान। ग्रं० —×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—१२६६ फ० = १६४८ वि०। पत्र-सं०—२०। दशा—पूर्ण। आ०—५·४"×४·५"। लिपि—नागरी।

१—शाहाबाद (बिहार)-निवासी; घनारंग के समकालीन; १८वीं शती में वर्त्तमान।

२—जहाँगीर बादशाह का पुत्र; दिल्ली का बादशाह; सं० १७१५ वि० में वर्त्तमान।

४०९—हनुमान अस्तुति । ग्रं०—× । लि०—भुलुलाल । र० का०—× । लि० का०—१२८८ फ० = १९३७ वि० । पत्र-सं०—७ । दशा—पूर्ण । आ०—७·३"×६" । लिपि—नागरी ।

४१०—गुरुमहिमा । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—६ । दशा—खण्डित । आ०—९·१२"×६·८" । लिपि—कैथी ।

४११—रामकथा । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—११ । दशा—खण्डित । आ०—८·१२"×६" । लिपि—नागरी ।

४१२—दानलीला । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि०का०—× । पत्र-सं—३ । दशा—खण्डित । आ०—७·८"×३·१२" । लिपि—नागरी ।

४१३—धनुषभंग । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—२ । दशा—खण्डित । आ०—८·७"×४·५" । लिपि—नागरी ।

४१४—सीतापताल । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं—४० । दशा—खण्डित । आ०—८"×५·१०" । लिपि—कैथी ।

४१५—प्रह्लाद चरित्र । ग्रं०—× । लि०—शिवरतनराम । र० का०—× । लि० का०—१९०५ वि० । पत्र-सं०—१६ । दशा—पूर्ण । आ०—७·१२"×६" । लिपि—नागरी ।

४१६—भजनावली । ग्रं०—× । लि०—रामेश्वरप्रसाद । र० का०—× । लि० का०—१९०६ वि० । पत्र-सं०—३५६ । दशा—पूर्ण । आ०—७·१०"×५·१२" । लिपि—कैथी ।

४१७—सुदामा की बारहखड़ी । ग्रं०—× । लि०—नरेन्द्रनारायणसिंह । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—४ । दशा—पूर्ण । आ०—६·६"×४·२" । लिपि—नागरी ।

४१८—राग परज । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—१४ । दशा—खण्डित । आ०—६·८"×५" । लिपि—नागरी ।

४१९—सूरजपुराण । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—२० । दशा—खण्डित । आ०—६"×४·१२" । लिपि—नागरी ।

४२०—वृन्दावन लीला । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—१८८५ वि० । पत्र-सं०—६२ । दशा—खण्डित । आ०—४·२"×२·१४" । लिपि—नागरी ।

४२१—आभास रामायण । ग्रं०—× । लि०—प्रेमरंग । र० का०—× । लि० का०—१८८४ वि० । पत्र-सं०—८६ । दशा—पूर्ण । आ०—७·८"×४·२" । लिपि—नागरी ।

४२२—कवित्त संग्रह । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—२५ । दशा—खण्डित । आ०—६·८"×४·१०" । लिपि—नागरी ।

४२३—जगन्नाथ रामायण। ग्रं०—×। लि०—भगवानलाल। र० का०—×। लि० का०—१७५५ वि०। पत्र-सं०—२५८। दशा—खण्डित। आ०—११·१०"×६"। लिपि—नागरी।

४२४—तुलसी सुभाषावली। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—५। दशा—पूर्ण। आ०—१०·१२"×५·८"। लिपि—नागरी।

४२५—नलचरित्र। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—१८७५ वि०। पत्र-सं०—२०। दशा—खण्डित। आ०—६·८"×५·१०"। लिपि—नागरी।

४२६—दृष्टान्तबोधिका (प्रथम शतक)। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—६। दशा—पूर्ण। आ०—१२"×५·८"। लिपि—नागरी।

४२७—दृष्टान्तबोधिका (वैराग्य शतक)। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—६। दशा—खण्डित। आ०—१२"×६"। लिपि—नागरी।

४२८—दृष्टान्तबोधिका (रामनाम शतक)। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि०—×। पत्र-सं०—७। दशा—पूर्ण। आ०—१२"×५"। लिपि—नागरी।

४२९—दृष्टान्त शतक। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—७। दशा—पूर्ण। आ०—१०·४"×५"। लिपि—नागरी।

४३०—मनबोध। ग्रं०—×। लि०—शीतलदास। र० का०—×। लि० का०—१२६७ फ० = १९१६ वि०। पत्र-सं०—२४। दशा—खण्डित। आ०—६·४"×६·१०"। लिपि—नागरी।

४३१—मंगलपुराण। ग्रं०—×। लि०—शीतलदास। र० का०—×। लि०का०—१२६७ फ० = १९१६ वि०। पत्र-सं०—१३। दशा—पूर्ण। आ०—६·४"×६·१०"। लिपि—नागरी।

४३२—मौनगीता। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—११। दशा—पूर्ण। आ०—५·८"×३·१०"। लिपि—नागरी।

४३३—प्रेमरतन। ग्रं०—×। लि०—चेतनराम। र० का०—×। लि० का०—१९०६ वि०। पत्र-सं०—२८। दशा—पूर्ण। आ०—६·८"७·१२"। लिपि—नागरी।

४३४—भजनावली। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१४। दशा—खण्डित। आ०—६"×५·८"। लिपि—नागरी।

४३५—भजन संग्रह (स्फुट, संगीत)। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि०—का०—×। पत्र-सं०—१०। दशा—पूर्ण। आ०—६·१०"×५·६" लिपि—नागरी।

४३६—भरथकथा। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—६। दशा—खण्डित। आ०—६·४"×५·१२"। लिपि—नागरी।

४३७—रामकथा। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—७८। दशा—खण्डित। आ०—८·६"×४·१२"। लिपि—नागरी।

४३८ रामजन्म-कथा। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१२। दशा—खण्डित। आ०—८·६"×५·२"। लिपि नागरी।

४३९—विचारमाला। ग्रं०—×। लि०—जदुनायक भगत। र० का०—×। लि० का०—१८८८ वि०। पत्र-सं०—२१। दशा—पूर्ण। आ०—६·४"×४"। लिपि—नागरी।

४४०—सावित्री सत्यवान की कथा। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—५। दशा—खण्डित। आ०—६"×६"। लिपि—नागरी।

४४१—सोतापताल। ग्रं०—×। लि०—शीतलदास। र० का०—×। लि० का०—१९१० वि०। पत्र-सं०—४३। दशा—पूर्ण। आ०—९·४"×६·१०"। लिपि—नागरी।

४४२—स्कन्धपुराण की साख्यबखानी। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि०का०—×। पत्र-सं०—२६। दशा—खण्डित। आ०—६"×४·८"। लिपि—नागरी।

४४३ कृष्णजन्मोत्सव। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—३२। दशा—खण्डित। आ०—७"×६·१३"। लिपि—नागरी।

काव्य

४४४—गोपाल गारी। ग्रं०—तुलसीदास। लि०—लालाजगन्नाथसिंह। र०का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८५७ ई०। पत्र-सं०—४। दशा—पूर्ण। आ०—७·८"×५·१४"। लिपि—नागरी।

४४५—सुखद सतसई[1]। ग्रं०—मधुकवि। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—५८। दशा—पूर्ण। आ० —१२·१२"७·१२"। लिपि—नागरी।

४४६—मोहन शकुनावली। ग्रं०—मधुकवि। लि०—×। र०का०—×। लि०का०—×। पत्र-सं०—५४। दशा—खण्डित। आ०—१२·१२"×७·१०"। लिपि—नागरी।

१—इस जिल्द में—(१) रामपचासा (पृ० सं० ५१), (२) रामबोल गोसाईं-गाथा, अर्थात् गोस्वामी तुलसीदास का जीवन-चरित्र (पृ० सं० ५८), और (३) भारत-सुधार नाटक (पृ० सं० २१) नामक रचनाएँ भी इस ग्रंथकार की हैं।

४४७—सुन्दरदास के सवैया । ग्रं०—सुन्दरदास[1] । लि०—× । र० का—प्रसिद्ध । लि० का० – × । पत्र-सं०—३० । दशा—पूर्ण । आ०—६·४"४" । लिपि—नागरी ।

४४८—रामचन्द्रिका । ग्रं०—केशवदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं० - ८० । दशा—खण्डित । आ०—१२·१२"×५" । लिपि—नागरी ।

४४९—रामचन्द्रिका (सटीक) । ग्रं०—केशवदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—२४६ । दशा—खण्डित । आ०—१४"×६·१०" । लिपि—नागरी ।

४५०—रसिक दोड़कली । ग्रं०—हितहरिवंश । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—१५ । दशा—खण्डित । आ०—६·८"×५·२" । लिपि—नागरी ।

४५१—रसिकमाल वर्षोत्सव । ग्रं०—हितहरिवंश । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का० — × । पत्र-सं०—२३४ । दशा—पूर्ण । आ०—१०·८"×८" । लिपि—नागरी ।

४५२—बिहारी सतसई । ग्रं०—बिहारीलाल । लि०—शिवजीभट्ट । × । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१८१३ वि० । पत्र-सं०—४६ । दशा—पूर्ण । आ०—९"×५·१०" । लिपि—नागरी ।

४५३—बिहारी सतसई । ग्रं०—बिहारीलाल । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं—१९ । दशा – खण्डित । आ०—१२"×४·८" । लिपि—मैथिली ।

४५४—बिहारी सतसई । ग्रं०—बिहारीलाल । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—१८५७ वि० । पत्र-सं०—४४ । दशा—पूर्ण । आ०— ९·९"×४·२" । लिपि—नागरी ।

४५५—बिहारी सतसई (सटीक) ग्रं०—बिहारीलाल । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं—४५ । दशा—खण्डित । आ०—१३"×४·१२" । लिपि—मैथिली ।

४५६—बिहारी सतसई (सटीक) । ग्रं०—बिहारीलाल । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—१२८ । दशा—खण्डित । आ०—१२"×६" । लिपि—नागरी ।

४५७—गोपाल बाललीलासार । ग्रं०—जनभगवानदास । लि०—× । र० का०—× ।

१—दादूजी के शिष्य; (धौसा, जयपुर)-निवासी; सं० १७४६ वि० में वर्त्तमान । दे० 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (प्रथम भाग), काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा ।

लि० का०—१६३५ वि० । पत्र-सं०—७ । दशा—पूर्ण । आ०—७·१२"×५·४" । लिपि—नागरी ।

४५८—विजय मुक्तावली । ग्रं०—छत्रसिंह[1] । लि०—भोलानाथ । र० का०—१७५७ वि० । लि० का०—१६३० वि० । पत्र-सं०—२३८ । दशा—खण्डित । आ०—६·५"×६·४" । लिपि—नागरी ।

४५९—रसराज । ग्रं०—मतिराम[2] । लि०—हीरामणिमिश्र । र० का०—१८८१ वि० । लि० का०—× । पत्र-सं०—३६ । दशा—पूर्ण । आ०—१२"×४ १२" । लिपि—नागरी ।

४६०—शिवदीपक । ग्रं०—जैरामदास । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—१८८३ वि० । पत्र-सं०—१७ । दशा—पूर्ण । आ०—६·१२"×५" । लिपि—नागरी ।

४६१—युगल विहार । ग्रं०—दर्शनशर्मा । लि०—× । र० का०—१६५५ वि० । लि० का०—× । पत्र-सं०—६५ । दशा—पूर्ण । आ०—८ १२"×५·६" । लिपि—नागरी ।

४६२—रामाश्वमेध । ग्रं०—मधुसूदनदास[3] । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—१६०८ वि० । पत्र-सं०—३२५ । दशा—खण्डित । आ०—१३ ८"×६·१०" । लिपि—नागरी ।

४६३—प्रेम प्रकाश । ग्रं०—गोस्वामी गोवर्द्धनलाल[4] । लि०—मूलचन्द्रलाल । र० का० × । लि० का० १६७३ वि० । पत्र-सं० १४० । दशा—पूर्ण । आ०—१३·६" × ८·४" । लिपि—नागरी

१—ग्वालियर-राज्य के भदावर (अटेर)-निवासी; सं० १७५७ वि० के लगभग वर्त्तमान; जाति के श्रीवास्तव कायस्थ; अमरावती के राजा कल्याणसिंह के राजकवि । काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा की खोज में भी यह रचना मिली है । दे० खो० वि० १९०६—८, ग्रं० सं० २३ और खो० वि० १९०९–११, ग्रं० सं० ४८ ।

२—तिगवाँपुर (कानपुर)-निवासी; सं० १७०७ के लगभग वर्त्तमान ।

३—सं० १८३२ के लगभग वर्त्तमान; इनके विषय में और कुछ भी ज्ञात नहीं । दे० 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (प्रथम भाग), काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा, पृ० सं० ११५ । खोज में प्राप्त दूसरी प्रति में रचना-काल सं० १८३९ वि० = १७८२ ई० है । दे० ना० प्र० स० (काशी) खो० वि० १९०९—११; ग्रं० सं० १८१; खो० वि० १९२०–२२, ग्रं० सं० ९७ और खो० वि० १९२३-२५, ग्रं०सं० २५१; खो० वि० १९२६—२८, ग्रं० सं० २७८ ए० बी० और सी० । नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) की खोज में उपलब्ध प्राचीनतम हस्तलेख सन् १८६७ ई० = १९२३ वि० का है ।

४—गोस्वामी हितहरिवंश के वंशज; ईसा की उन्नीसवीं शती के अन्त में वर्त्तमान; चौदह भाषाओं के ज्ञाता ।

४६४—हितोपदेश । ग्रं०—पदुमनदास[1] । लि०—×। र० का०—× । लि०का०—×। पत्र-सं०—११६ । दशा—खण्डित । आ०—८"×५·१२" । लिपि—नागरी ।

४६५—हितोपदेश । । ग्रं०—श्यामदास । लि०—पदारथदास । र० का०—× । लि० का०—१९०४ वि० । पत्र-सं०—१४ । दशा—पूर्ण । आ०—७·१२"×६" । लिपि—नागरी ।

४६६—गोपीविरह । ग्रं०—रामप्रसाद[2] । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—४ । दशा—पूर्ण । आ०—९"५·४" । लिपि—नागरी ।

४६७—अमर चन्द्रिका (बिहारी सतसई की टीका) । ग्रं०—सूरतमिश्र[3] । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं—९८ । दशा—पूर्ण । आ०—१०"×६·४" । लिपि—नागरी ।

४६८—गीतसंग्रह । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—४८ । दशा—खण्डित । आ०—७·८"×५·१२" । लिपि—कैथी ।

४६९—दृष्टान्त दोहा । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि०का०—× । पत्र-सं०—८ । दशा—पूर्ण । आ०—९"×४" । लिपि—नागरी ।

४७०—प्रहलाद चरित्र । ग्रं०—× । लि०—दिनेशानन्द । र० का०—× । लि० का०—१८९९ वि० । पत्र-सं०—८५ । दशा—पूर्ण । आ०—८"×४·१०" । लिपि—नागरी ।

१—हजारीबाग (बिहार)-निवासी; रामगढ़-राज्य के आश्रित कवि; सं० १७३८ वि० में वर्त्तमान; इस रचना की अन्य प्रतियाँ भी खोज में मिली हैं । दे० ना० प्र० स० (काशी) खो० वि० १९२६—२८, ग्रं० सं० ३३९ और बि० रा० भा० प० से प्रकाशित 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (पहला खण्ड) पृ० सं० 'छ', कवि-सं० १७, पृ० सं० २२, ग्रं० सं० २२, परिशिष्ट-३ की क्र० सं० ८ (पृ० २१७) तथा बि० रा० भा० प० से प्रकाशित दूसरे खण्ड की पृ० सं० 'ज', कवि सं० २०, ग्रं० सं० १८, ४०, ८१ और ८२ ।

२—बेतिया-राज्य (चम्पारन, बिहार) के आश्रित कवि; सं० १८७७ वि० में वर्त्तमान ।

३—आगरा-निवासी; सं० १७९८ वि० के लगभग वर्त्तमान; जाति के कान्यकुब्ज ब्राह्मण; दिल्ली के बादशाहमुहम्मद शाह के आश्रित । इनकी अन्य सात—अमर चंद्रिका, रस गाहक चंद्रिका, रसरत्नमाला, रसिकप्रिया टीका, कविप्रिया टीका, अलंकारमाला, सरस रस—रचनाएँ खोज में मिली हैं । दे०-खो० वि०-१९२३—२५, ग्रं० सं० ४१९; खो० वि० १९२६-२८; ग्रं० सं० ४७४ (पृ० सं० ९१, ८१०) और विशेष विवरण के लिए दे० 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (प्रथम भाग), काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा, पृ० सं० १८७ ।

४७१—महाभारत (आल्हा)। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—८। दशा—खण्डित। आ०—८.१२"×६.८"। लिपि—नागरी।

४७२—विविध गीत[1]। ग्रं०—×। लि०—गोपाललाल। र० का०—×। लि० का०—। पत्र-सं०—१४। दशा—खण्डित। आ०—७.१२"×६.६"। लिपि—कैथी।

४७३—हरिचंद कथा। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१६। दशा—पूर्ण, जीर्ण। आ०—६.२"×४.१०"। लिपि—नागरी।

४७४—हिन्दी महाभारत (पद्यबद्ध) ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२४। दशा—खण्डित, जीर्ण। आ०—८.१२"×३.१२"। लिपि—नागरी।

स्फुट काव्य

४७५—दृष्टान्तसंग्रह। ग्रं०—धर्मदास[2]। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—५१। दशा—खण्डित।

४७६—रघुवीर नारायण के स्फुट काव्य[3]। ग्रं०—रघुवीर नारायण। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। दशा—खण्डित। आ०—१२.४"×८"। लिपि—नागरी।

४७७—मनबोध। ग्रं०—तुलसीदास[4]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—५। दशा—पूर्ण। आ०—६.६"×४.५"। लिपि—नागरी।

४७८—गीतसंग्रह। ग्रं०—मुकुट दूबे[5]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१३। दशा—खण्डित। आ०—६.८"×४"। लिपि—नागरी।

४७९—स्फुट कविताएँ। ग्रं०—मुकुट दुबे। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२६। दशा—पूर्ण। आ०—६.८" × ४"। लिपि—कैथी।

४८०—कवित्तसंग्रह। ग्रं०—मडुकी मल्लिक। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१८। दशा—पूर्ण। आ०—६.४"×४.२"। लिपि—नागरी।

१—इस भजन-संग्रह में सरभंग-सम्प्रदाय के संतों—भिखमराम और टेकमनराम—के भी फुटकर गीत हैं।

२—कबीरदास के शिष्य; सं० १४५७ वि० के लगभग वर्त्तमान।

३—नयागाँव (सारन, बिहार)-निवासी; बनैली के महाराज कीर्त्यानन्द सिंह के आश्रित; सं० २०११ वि० में वर्त्तमान।

४—प्रसिद्ध गोस्वामी तुलसीदास से भिन्न।

५—बच्चू मल्लिक के समकालीन; डुमराँव-राज्य के आश्रित; स्फुट गीतों के रचयिता।

४८१—स्फुट कविताएँ। ग्रं०—महादेव हलुआई[1]। लि०—×। र० का०—१६१० वि०। लि०का०—×। पत्र-सं०—५। दशा—खण्डित। आ०—८"×६"। लिपि—नागरी।

४८२—लघु संग्रह। संग्रहकर्त्ता—हीरामन। लि०—हीरामन। र० का०—×। लि० का०—१६०० वि०। पत्र-सं०—१४। दशा—पूर्ण। आ०—११·४"×४·८"। लिपि—नागरी।

४८३—हिन्दी कविता। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२। दशा—खण्डित। आ०—६·८"×४·६"। लिपि—नागरी।

४८४—विविध गीतसंग्रह। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२८। दशा—खण्डित। आ०—६·६"×६"। लिपि—कैथी।

४८५—स्फुट कविताएँ। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१०१। दशा—खण्डित। आ०—७·४"×४·१२"। लिपि—नागरी।

४८६—विविध राग के गीत। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि०का०—×। पत्र-सं०—८। दशा—खण्डित। आ०—७·२"×४·१४"। लिपि—नागरी।

४८७—संगीत प्रकाश। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—६२। दशा—खण्डित। आ०—८·६"×५·४"। लिपि—नागरी।

४८८—विभिन्न राग के गीत (संगीत)। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२७। दशा—खण्डित। आ०—६"×५·८"। लिपि—नागरी।

४८९—बच्चू मलिक के गीत (संगीत)। ग्रं०—बच्चू मलिक। लि०—सहदेव दूबे। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—३०। दशा—पूर्ण। आ०—८·२"×६·८"। लिपि—नागरी।

४९०—रागमाला (संगीत)। ग्रं०—दिगम्बर दूबे[2]। लि०—×। र०का०—१६३४ वि०। लि० का०—×। पत्र-सं०—६६। दशा—पूर्ण। आ०—८·८"×५·४"। लिपि—नागरी।

४९१—रागविहाग (होली, संगीत)। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—५७। दशा—खण्डित। आ०—१०·८"×६·४"। लिपि—नागरी।

चरित-काव्य

४९२—जयप्रकाश सर्वस्व। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि०—×। पत्र-सं०—७८। दशा—पूर्ण। आ०—८·३"×५"। लिपि—नागरी।

१—शाहाबाद-जिला (बिहार-राज्य)-निवासी; डुमरॉंव-राज्याश्रित गीतकार और कान्हजोसहाय के समकालीन।

२—शाहाबाद-जिला (बिहार-राज्य)-निवासी; डुमरॉंव-राज्याश्रित कवि; उन्नीसवीं शती के अन्त में वर्त्तमान।

४६३—आत्मबोध। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१३३। दशा—खण्डित। आ०—१२"×८"। लिपि—नागरी।

४६४—रुक्मिणी मंगल। ग्रं०—रामलला। लि०—×। र०का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२५। दशा—पूर्ण। आ०—८'४"×६'८"। लिपि—नागरी।

४६५—सुदामा चरित। ग्रं०—वंशमणि। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२४। आ०—६'६"×६"। लिपि—नागरी।

४६६—रामजनम। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२४। दशा—पूर्ण। आ०—६'४"×४'६"। लिपि—नागरी।

काव्य-शास्त्र

४६७—रसिकप्रिया। ग्रं०—केशवदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—५। दशा—खण्डित। आ०—६.८"×४'४"। लिपि—नागरी।

४६८—रसिकप्रिया। ग्रं०—केशवदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—८। दशा—खण्डित। आ०—६"×४'२"। लिपि—नागरी।

४६९—रसिकप्रिया। ग्रं०—केशवदास। लि०—रामचरनमिश्र। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८५४ वि०। पत्र-सं०—४७। दशा—पूर्ण। आ०—९'८"×६'४"। लिपि—नागरी।

५००—कविप्रिया। ग्रं०—केशवदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—१२०। दशा—खण्डित। आ०—८'८"×५'८"। लिपि—नागरी।

५०१—कविप्रिया। ग्रं०—केशवदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि०का०—×। पत्र-सं०—२०९। दशा—पूर्ण। आ०—११"×७"। लिपि—नागरी।

५०२—कविप्रिया। ग्रं०—केशवदास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—६१। दशा—खण्डित। आ०—९'८"×७"। लिपि—नागरी।

५०३—अष्टनायिका वरणन। ग्रं०—सुन्दरकवि[१]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२१। दशा—खण्डित। आ०—१३"×६'१२"। लिपि—नागरी।

५०४—रसविलास। ग्रं०—कविदेव। लि०—×। र०का०—प्रसिद्ध। लि० का०—×। पत्र-सं०—१२२। दशा—पूर्ण, जीर्ण। आ०—७'८"×५"। लिपि—नागरी।

१—यह रचना कृष्णगढ़ के राजा राजसिंह की पुत्री, सं० १८४५ के लगभग वर्त्तमान सुन्दरकुँवरि नाम से ज्ञात स्त्री-कवि की प्रतीत होती है। इस कवियित्री की एतद्-विषयक अन्य रचनाएँ भी नागरी-प्रचारिणी-सभा (काशी) की खोज में मिली हैं। दे० 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (पहला भाग), पृ० सं० १८१।

५०५—रसकुसुमाकर। ग्रं०—अवधप्रतापनारायणसिंह। लि०—×। र० का—×। लि० का०—१६४६ वि०। पत्र-सं० १६१। दशा—पूर्ण। आ०—६·८"×७·१०"। लिपि—नागरी।

५०६—व्यंग्यार्थ कौमुदी। ग्रं०—प्रतापसिंह[1] (साहि)। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र सं०—२६। दशा—खण्डित। आ०—११·१२"×४"। लिपि—नागरी।

५०७—रसप्रकाश। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२०। दशा—खण्डित। आ०—६"×५·८। लिपि—नागरी।

५०८—काव्यनिर्णय। ग्रं०—राजकुमार हिन्दूपति[2]। लि०—×। र० का०—१८०३ वि०। लि० का०—×। पत्र-सं०—४६। दशा—खण्डित। आ०—६·८"×६·८"। लिपि—नागरी।

भाषाभूषण। ग्रं०—महाराज यशवंतसिंह[3]। लि०—×। र० का०—×। लि० का—×। पत्र सं०—१३। दशा—खण्डित। आ०—१०·८"×६·१०"। लिपि - नागरी।

१—कवि रतनेश के पुत्र; चरखारी (बुन्देलखण्ड)-नरेश विक्रमसाहि के आश्रित; सं० १८८६ वि० के लगभग वर्त्तमान; जाति के बंदीजन; इनकी अन्य ग्यारह रचनाएँ नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) की खोज में मिली हैं। दे० 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (प्रथम भाग), काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा, पृ० सं० ८९ और ९०।

२—पन्ना-नरेश; सं० १८१३ वि० के लगभग वर्त्तमान; भिखारीदास, रतनकवि, रनपसाहि और कर्णकवि के आश्रयदाता; महाराज छत्रसाल के पौत्र। दे० ना० प्र० स० (काशी) खो० वि०-१९०४, ग्रं० सं० १५; खो० वि० १९०६—८, ग्रं० सं० ५७, १०३, १०५ और ११९।

३—जोधपुर-नरेश;सं० १६९२—१७३५ वि० के लगभग वर्त्तमान; 'जसवंतसिंह' नाम से भी खोज में उपलब्ध। इनकी रचनाएँ नागरी प्रचारिणी-सभा (काशी) की भी खोज में मिली हैं। दे० खो० वि० १९०१, ग्रं० सं० ७२, ७४ और ८६; खो० वि० १९०२, ग्रं० सं० १४, १५, १६, १७, २२, ४६, ५७; खो० वि० १८०६—१८ ग्रं० सं० १७६, २५१; खो० वि० १९०५, ग्रं०सं० ३९; खो० वि० १९२०-२२, ग्रं० सं० ७०; खो० वि० १९२३—२५, ग्रं० सं० १८३; खो० वि० १९२६-२८, ग्रं० सं० २०१ बी०, सी०, डी०, ई० और पृ० ४९, कवि-सं० २०१। तथा काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से प्रकाशित 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (पहला भाग), पृ० सं० ५२।

५१०—साहित्य सागर। ग्रं०—जानकीकवि[१]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—११२। दशा—पूर्ण। आ०—११·८"×७·४"। लिपि—नागरी।

५११—सुवृत्तहार। ग्रं०—गजराजकवि[२]। लि०—×। र० का०—१९०३ वि०। पत्र-सं०—६१। दशा—पूर्ण। आ०—१४"×७"। लिपि—नागरी।

छन्द-शास्त्र

५१२—छन्द त्रिभंगी। ग्रं०—लखन द्विज। लि०—×। र० का०—× लि० का०—×। पत्र-सं०—७०। दशा—पूर्ण। आ०—८·८"×४·८"। लिपि—नागरी।

५१३—छन्द विचार। ग्रं०—सुखदेवमिश्र[३]। लि०—×। र० का०—१८२१ वि०। लि० का०—×। पत्र-सं०—५४। दशा—खण्डित। आ०—८"×५"। लिपि—नागरी।

ज्यौतिष

५१४—शकुन विचार। ग्रं०—×। लि०—अनन्तलाल। र० का०—×। लि० का०—१२९८ फ० = १९४७ वि०। पत्र-सं०—५। दशा—खण्डित। आ०—९"×५·१०"। लिपि—नागरी।

५१५—सगुनौती। ग्रं०—×। लि०—बन्धुराम। र० का०—×। लि० का०—१९४६ वि०। पत्र-सं०—१६। दशा—पूर्ण। आ०—७·१०"×६"। लिपि—नागरी।

५१६—रमल प्रकाश। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१२२। दशा—खण्डित। आ०—११·९"×७·१०"। लिपि—नागरी।

५१७—अवजद प्रश्न। ग्रं०—लालजीमिश्र। लि०—लालजीमिश्र। र० का०—१२७३ फ० = १९२२ वि०। लि० का०—१२७३ फ० =१९२२ वि०। पत्र-सं०—१२। दशा—पूर्ण। आ०—६·४"×४·६"। लिपि—नागरी।

५१८—हनुमान ज्योतिष। ग्रं०—×। लि०—मुकुट मलिक। र० का०—×।

१—इस नाम के (दास) तीन ग्रन्थकार नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को खोज में मिल चुके हैं। ये उनसे भिन्न प्रतीत होते हैं।

२—बनारस-निवासी; सं १९०३ वि० के लगभग वर्त्तमान। यह रचना काशी-नागरी प्रचारिणी सभा को भी खोज में मिली है। दे० खो० वि० १९०३, ग्रं० सं० ७१।

३—कंम्पिला (फर्रुखाबाद) के निवासी; सं० १७२८ के लगभग वर्त्तमान। इनके रचित ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को भी खोज में मिली हैं। दे० 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा), पहला भाग, पृ० सं० १८४।

लि० का०—१२६८ फ०=१६४७ वि०। पत्र-सं०—३१। दशा—पूर्ण। आ०—५'६"×४'४"। लिपि—नागरी।

५१६—रमल पुस्तक। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र सं०—३। दशा—खण्डित। आ०—६"×५'८"। लिपि—नागरी।

दर्शन

५२०—गीता (हिन्दी-पद्यानुवाद)। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—१८८८ वि०। पत्र-सं०—१२७। दशा—पूर्ण। आ०—५'४"×४'२"। लिपि—नागरी।

५२१—गीता (हिन्दी-पद्यानुवाद)। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१८७। दशा—खण्डित। आ०६"×४"। लिपि—नागरी।

५२२—गीता (हिन्दी-पद्यानुवाद)। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१६। दशा—खण्डित। आ०—८'८"×५'८" लिपि—नागरी।

५२३—अध्यात्मप्रकाश। ग्रं०—सुखदेव कवि (मिश्र)[1]। लि०—गोविन्ददास। र० का०—×। लि० का—१६४० वि०। पत्र-सं०—३५। दशा—पूर्ण। आ०—६'४"×४"। लिपि—नागरी।

५२४—अध्यात्मप्रकाश। ग्रं०—सुखदेव कवि (मिश्र)। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२०। दशा—खण्डित। आ०—१०"×५"। लिपि—नागरी।

५२५—मणिरत्नमाला। अनुवादक—दर्शनशर्मा। लि०—×। अनु० का०—१३०४ फ०=१६५३ वि०। लि० का०—×। पत्र-सं०—५०। दशा—पूर्ण। आ०—८'१२"×५'४"। लिपि—नागरी।

काम-शास्त्र

५२६—कामकलाप्रकाश। ग्रं०—होहंदलाल। लि०—बलरामदास। र० का०—×। लि० का०—१६३४ वि०।

५२७—कोकसार। ग्रं०—आनन्दकवि[2]। लि०—शिवजीभट्ट। र० का—१८१३ वि०। लि० का०—१८१३ वि०। पत्र-सं०—२०। दशा—खण्डित। आ०—६"×५'१०"। लिपि—नागरी।

१—कम्पिला (फर्रुखाबाद) के निवासी; सं० १७२८ वि० के लगभग वर्त्तमान।

२—उप० 'अनन्द'; ये पिछले विवरण में भी आ चुके हैं। दे० 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का खोज-विवरण' (पहला खण्ड), पृष्ठ० १२७-१२८।

५२८—कोकसार। ग्रं० ×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—२७। दशा—खण्डित। आ०—८'१०"×५'१४"। लिपि—नागरी।

कोष

५२९—अनेकार्थध्वनिमंजरी। ग्रं०—क्षपणक[1]। लि०—बालकराम पाठक। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१८९३ वि०। पत्र-सं०—६। दशा—पूर्ण। आ०—१३"×४'१२"। लिपि—नागरी।

५३०—नाममाला। ग्रं०—नन्ददास। लि०—बालकराम पाठक। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१२४४ फ०=१८९३ वि०। पत्र-सं०—२०। दशा—पूर्ण। आ०—१२'८"×४'८"। लिपि—नागरी।

५३१—नाममंजरी। ग्रं०—नन्ददास। लि०—×। र० का०—प्रसिद्ध। लि० का०—१९०२ वि०। पत्र-सं०—१५। दशा—पूर्ण। आ०—९'१२"×५'८। लिपि—नागरी।

धर्म

५३२—गर्भगीता। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं—२०। दशा—खण्डित। आ०—६'६"×३'१२"। लिपि—नागरी।

५३३—गीतामाहात्म्य (गद्य में)। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। पत्र-सं०—४४। दशा—पूर्ण। आ०—६'४"×३'१०"। लिपि—नागरी।

५३४—गीतासार (गद्य में)। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का—×। पत्र-सं०—३२। दशा—पूर्ण। आ०—६'६"×३'१२"। लिपि—नागरी।

५३५—दृष्टांतसमुच्चय। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—६। दशा—खण्डित। आ०—९"×५'८"। लिपि—नागरी।

धर्मशास्त्र

५३६—तिथिनिर्णय। ग्रं०—प्रभुनाथ[2]। लि०—×। र० का०—१९३३ वि०। लि० का०—×। पत्र-सं०—३४। दशा—पूर्ण। आ०—६'१२"×५'८"। लिपि—नागरी।

५३७—वर्षोत्सवनिर्णय। ग्रं०—प्रियादास[3]। लि०—×। र० का०—×। लि०

१—संस्कृत के प्रसिद्ध कवि, विक्रमादित्य के नवरत्नों में एक; कवि कालिदास के समकालीन। यह क्षपणक के मूल संस्कृत-ग्रन्थ का हिन्दी-अनुवाद है।

२—नवोपलब्ध कवि; १९३३ वि० में वर्त्तमान। इनके सम्बन्ध की कोई अन्य सूचना उपलब्ध नहीं है।

३—स्वामी हितहरिवंश के अनुयायी; सं० १९०५ वि० के लगभग वर्त्तमान; राधावल्लभी साधु; भक्तमाल के टीकाकार प्रियादास से भिन्न। इनके अनेक ग्रन्थ ना० प्र० स० (काशी) की खोज में मिले हैं। दे० खो० वि० १९०९-१०, ग्रं० सं० ३३१ ए०, बी०, सी०, डी० और ई०।

का०—१६२३ वि०। पत्र-सं०—१४। दशा—पूर्ण। आ०—६·१२"×५·८"। लिपि—नागरी।

५३८—पंचकल्याणविधान—जैनधर्म-ग्रन्थ (हिन्दी-रूपान्तर)। अनुवादक—हरिकिसन[1]। लि०—× अनु० का०—१८८० वि०। लि० का०—१६२४ वि०। पत्र-सं—३१। दशा—पूर्ण। आ०—१०·४"×६"। लिपि—नागरी।

स्तोत्र

५३६—अनेकस्तोत्रसंग्रह। ग्रं०—गंगाराम[2]। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—६। दशा—खण्डित। आ०—७·८"×४·१२"। लिपि—कैथी।

५४०—अनेकस्तोत्रसंग्रह। ग्रं०—×। लि०—बलदेवदास। र० का०—×। लि० का०—१६६४ वि०। पत्र-सं०—२८। दशा—पूर्ण। आ०—८"×५·२"। लिपि—नागरी।

५४१—गणेश चालीसा। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१६। दशा—पूर्ण। आ०—५·४"×४·४"। लिपि—कैथी।

५४२—जुगल किशोर की आरती। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—६। दशा—पूर्ण। आ०—७·१०"×४·२"। लिपि—नागरी।

५४३—दुर्गास्तोत्र। ग्रं०—दर्शनशर्मा। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं०—१०। दशा—पूर्ण। आ०—८"×५·४"। लिपि—नागरी।

५४४—जै माँ दुर्गे (देवीजी की आगमनी)। ग्रं०—दर्शनशर्मा। लि०—×।

१—ग्रन्थकार का नामोल्लेख ग्रन्थ में नहीं हुआ है। अनुवादक खोज में नये प्रतीत होते हैं। इनका रचनाकाल सं० १८८० वि० है। जैन-साहित्य में 'पञ्चकल्याण-पूजा', पञ्चकल्याणमङ्गल', 'पञ्चसंसार', पञ्चपूजानिरूपण', 'पञ्चाणुव्रतजपमन्त्र', 'पञ्चकल्याणकपाठ' आदि ग्रन्थ मिले हैं; किन्तु इस नाम का यह ग्रन्थ भी सम्भवतः नवोपलब्ध है।

२—इस नाम के छह ग्रन्थकार खोज में मिल चुके हैं, जिनमें 'ज्ञानप्रदीप' के ग्रन्थकार (मालवीय त्रिपाठी) का रचनाकाल सं० १८८६ है। 'सभा-भूषण' के कवि सं० १७४४ वि० और चन्देरी-निवासी तथा छत्रसाल के पिता सं० १८४४ वि० के पूर्व वर्त्तमान थे। ग्रन्थ का रचनाकाल ज्ञात नहीं हो सका है। दे० ना० प्र० स० (काशी) से प्रकाशित 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (पहला भाग), पृ० सं० ३३। ना० प्र० स० (काशी) के खो० वि० १९०६—११ और ग्रं० सं०८८ में उल्लिखित कवि और प्रस्तूयमान कवि अभिन्न प्रतीत होते हैं। इनका रचना-काल ज्ञात नहीं हो पाया है।

र० का०—१३०३ फ०=१६५२ वि० । लि०का०—×। पत्र सं०—३८ । दशा—पूर्ण। आ०—७'४"×४'८" । लिपि—नागरी ।

५४५—गजपुकार । ग्रं०—× । लि०—× । र० का—×। लि० का०—× । पत्र-सं०—१३ । दशा—पूर्ण । आ०—५'८"×२'१०" । लिपि—नागरी ।

५४६—अभयाकरन स्तोत्र । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—१६३६ वि० । पत्र-सं०—२७ । दशा—पूर्ण । आ०—५'७"×४'६" । लिपि—नागरी ।

इतिहास

५४७—वृन्दावन के विविध वस्तु[1] । ग्रं०—× । लि०—× । र० का—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—७ । दशा—पूर्ण । आ०—८'१०"×५'३" । लिपि—नागरी ।

५४८—द्विजदर्पण (टीका-सहित) । ग्रं० रामदास[2] (बुलाकी सिंह) । लि०—रामदास। र० का०—१२०७ फ० = १८५६ वि० । टीकाकाल—१६५३ वि० । लि० का०—१३१० फ० = १६५६ वि०। पत्र-सं०—१२० । दशा—पूर्ण । आ०१२'८"×६'६" । लिपि—नागरी ।

५४६—आंग्ल इतिहास । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—३१७ । दशा—खण्डित । आ०—१२'१२"×७'१०" । लिपि—नागरी ।

५५०—बंगाल का भौगोलिक वर्णन । ग्रं०—नरेन्द्रनारायणसिंह । लि०—नरेन्द्रनारायणसिंह । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—७६ । दशा—पूर्ण । आ०—८'८"×६'१२" । लिपि—नागरी ।

तन्त्र

५५१—तंत्रसार । ग्रं०—कबीरदास । लि०—× । र० का०—प्रसिद्ध । लि० का०—× । पत्र-सं०—६ । दशा—खण्डित । आ०—८'८"×७'१०" । लिपि—नागरी ।

५५२—यंत्रावली । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—। लि० का०—× । पत्र-सं०—२६ । दशा—पूर्ण । आ०—८'१०"×६'४" । लिपि—नागरी ।

५५३—रुद्रयामल तंत्र । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—×। लि० का०— ×। पत्र-सं०—७५ । दशा—खण्डित । आ०—८"×६" । लिपि—नागरी ।

१—इस ग्रन्थ में ग्रन्थकार ने वृन्दावन के वृक्ष, फूल तथा प्रमुख तीर्थस्थानों की सूची प्रस्तुत की है तथा वृन्दावन के भक्त-कवियों की नामावली भी दे दी है ।

२—खोज में नवोपलब्ध; १८५६ वि० में वर्त्तमान। इनके विषय में अन्य सूचना नहीं मिली है ।

५५४—यंत्रसमुच्चय । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—१० । दशा—खण्डित । आ०—८·१२"×५" । लिपि—नागरी ।

चिकित्सा

५५५—आयुर्वेदविलास । ग्रं०—देवीसिंह[1] । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—१२ । दशा—खण्डित । आ०—८"×६·४" । लिपि—नागरी ।

५५६—विविध रसायननिर्माणविधि । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—६ । दशा—खण्डित । आ०—८·१०"×७·१०" । लिपि—कैथी ।

५५७—सालहोत्र । ग्रं०—× । लि०—गणेश चौबे । र० का०—× । लि० का०—१९८३ वि० । पत्र-सं०—१० । दशा—खण्डित । आ०—७·१२"×६·६" । लिपि—नागरी ।

५५८—सारसंग्रह[2] । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—२७२ । दशा—पूर्ण । आ०—९·१२"×६·६" । लिपि—नागरी ।

५५९—कविचितरंजन । ग्रं०—गंगाराम । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—३१ । दशा—खण्डित । आ०—८"×६" । लिपि—नागरी ।

५६०—सर्वसंग्रह (चिकित्सासार) । ग्रं०—विष्णुगिरि[3] । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—१९०४ वि० । पत्र-सं०—३९ । दशा—पूर्ण । आ०—१०·८"×४·८" । लिपि—नागरी ।

कथा

५६१—अद्भुत-समाचार । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—८ । दशा—पूर्ण । आ०—१२·४"×८·४" । लिपि—नागरी ।

५६२—बैतालपचीसी । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—१९०२ वि० । पत्र-सं०—१०२ । दशा—पूर्ण । आ०—८·१४"×६·४" । लिपि—नागरी ।

५६३—नासकेत की कथा । ग्रं०—× । लि०—× । र० का०—× । लि० का०—× । पत्र-सं०—५५ । दशा—पूर्ण । आ०—६·४"×३·१०" । लिपि—नागरी ।

१—चन्देरी-नरेश; सं० १७३३ वि० के लगभग वर्त्तमान ।

२—इस जिल्द में सारसंग्रह के अतिरिक्त (२७२ पृष्ठ के बाद) १. कामिनीमानभंग रस, २. यंत्रावली (सुखेन-कृत), ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ भी हैं, जिनकी पृ० सं० क्रमशः १० और १८ है ।

३—गोसाईं गोविन्दगिरि के शिष्य; सं० १८०१ के लगभग वर्त्तमान ।

५६४—सिंहासन बतीसी (गद्य में)। अनुवादक—पुरुषोत्तमदास[1]। लि० का०—×। पत्र-सं—६४। दशा—खण्डित, जीर्ण। आ०—११'१०"×५'८" लिपि—नागरी।

गीति-नाट्य

५६५—रत्नावली। अनुवादक—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र। लि०—×। र० का०—१९२५ वि०। लि० का०—×। पत्र-सं०—२६। दशा—पूर्ण। आ०—१०'१२"×४'४"। लिपि—नागरी।

उपन्यास

५६६—बंबभोला। ग्रं०—मधुकवि। लि०—×। र० का०—×। लि०। का०—×। पत्र-सं—२०। दशा—पूर्ण। आ०—१२'८"×७'१०"। लिपि—नागरी।

जीवन-चरित्र

५६७—मेरी रामकहानी। ग्रं०—मधुकवि। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं—१०। दशा—पूर्ण। आ०—१२'८"×७'१०"। लिपि—नागरी।

भूगोल

५६८—भूगोल पुराण। ग्रं०—×। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—१७७६ शकाब्द। पत्र-सं०—१७। दशा—पूर्ण। आ०—६.८"×४"। लिपि—नागरी।

पत्र

५६९—तुलाराम-पत्र। लेखक—तुलाराम। लि०—×। र० का०—×। लि० का०—×। पत्र-सं—२। दशा—खण्डित। आ०—११'१०"×८"। लिपि—नागरी।

१—सं १८१७ वि० के पूर्व वर्त्तमान; मानदास के गुरु; दादरा-निवासी। इन्होंने जैमिनिपुराण का भी हिन्दी-अनुवाद किया है। दे० ना० प्र० स० (काशी) का खो० वि० १९०६—८, ग्रं० सं० १९५ और खो० वि १९२६—२८, कवि-सं० ३६३, पृ० सं ७५।

परिशिष्ट

* अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ

** ग्रन्थों तथा ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका

*** विक्रम-शताब्दी के अनुसार ग्रन्थों के रचनाकाल और लिपिकाल

**** महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज-विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का विवरण

परिशिष्ट-१

अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ

[ग्रन्थों के सामने कोष्ठकों में अंकित संख्याएँ विवरणिका में दी गई क्रम-संख्याएं हैं]

क्र०सं०	ग्रन्थों के नाम		विषय	रचना-काल	लिपिकाल	विशेष
१	अद्भुतसमाचार	(५६१)	कथा-साहित्य			
२	अनेकस्तोत्र-संग्रह	(५४०)	स्तोत्र-काव्य		१९६४वि०	
३	अभयाकरन स्तोत्र	(५४३)	,,		१९३६वि०	
४	आत्मबोध	(४६३	चरित-काव्य			
५	आभास रामायण	(४२१)	भक्ति-काव्य		१८८४वि०	
६	आंग्ल-इतिहास	(५४६)	इतिहास			
७	कवित्तसंग्रह	(४२२)	भक्ति-काव्य			
८	कोकसार	(५२८)	काम-शास्त्र			
९	कृष्णजन्मोत्सव	(४४३)	भक्ति-काव्य			
१०	गजपुकार	(५४५)	स्तोत्र-काव्य			
११	गणेशचालीसा	(५४१)	,,			
१२	गणेशमहातम	(४०३)	भक्ति-काव्य		१८७१वि०	
१३	गीता (हिन्दी)	(५२०)	दर्शन			
१४	,,	(५२१)	,,			
१५	,,	(५२२)	,,			
१६	गीता-माहात्म्य (गद्य)	(५३३	धर्मशास्त्र			
१७	,,	(५३४)	,,			

क०सं०	ग्रन्थों के नाम	विषय	रचना-काल	लिपिकाल	विशेष
१८	गीत-संग्रह (४६८)	काव्य			
१६	गुरुदेव-चर्चा (४०५)	भक्ति-काव्य			
२०	गुरु-महिमा (४१०)	,,			
२१	गर्भगीता (५३२)	धर्म-शास्त्र			
२२	जगन्नाथ रामायण (४२)	भक्ति-काव्य		१७५५वि०	
२३	जुगलकिशोर की आरती ५४२)	स्तोत्र-काव्य			
२४	तुलसी-सुभाषावली (४२४)	भक्ति-काव्य			
२५	दानलीला (४१२)	भक्ति-काव्य			
२६	दृष्टान्तबोधिका—प्रथम शतक (४२६)	,,			
२७	दृष्टान्तबोधिका—वैराग्य-शतक (४२७	,,			
२८	दृष्टान्तबोधिका रामनाम-शतक (४२८)	,,			
२६	दृष्टान्तशतक (४२६)	,,			
३०	दृष्टान्तदोहा (४६६)	,,			
३१	दृष्टान्तसमुच्चय (५३५	,,			
३२	धनुष-भंग (४१३)	,			
३३	धर्म-संवाद (१६४	सन्त-साहित्य		१६२६ वि०	
३४	नलचरित्र (४२५)	भक्ति-काव्य			
३५	नासकेत की कथा (५६३)	कथा-साहित्य		१८७५ वि०	
३६	प्रहलादचरित्र (४०४)	भक्ति-काव्य			
३७	प्रहलादचरित्र (४१५)	,		१६०५ वि०	
३८	प्रहलादचरित्र (४७०)	,,			

क्र०सं०	ग्रन्थों के नाम		विषय	रचना-काल	लिपिकाल	विशेष
३६	प्रेमरतन	(४३३)	भक्ति-काव्य		१८६६ वि०	
४०	बन्दीमोचन	(४०७)	,,		१६०६ वि०	
४१	बैतालपचीसी	(५६२)	कथा-साहित्य			
४२	भजननिर्गुन	(१६३)	सन्त-साहित्य		१६०२ वि०	
४३	भजनावली	(४१६)	भक्ति-काव्य			
४४	भजनावली	(४३४)	,,		१६०६ वि०	
४५	भजनसंग्रह	(४३५)	,,			
४६	भरतकथा	(४३६)	,,			
४७	भूगोलपुराण	(५६८)	भूगोल			
४८	मनबोध	(४३०)	भक्ति-काव्य		१७७६ श०	
४६	मंगलपुराण	(४३१)	,,		१६१६ वि०	
५०	मीनगीता	(४३२)	,,		१६१६ वि०	
५१	यन्त्रसमुच्चय	(५५४)	तन्त्र-साहित्य			
५२	यन्त्रावली	(५५२)	,,			
५३	रमलप्रकाश	(५१६)	ज्यौतिष			
५४	रमलपुस्तक	(५१६)	,,			
५५	रसप्रकाश	(५०७)	चरित-काव्य			
५६	राग परज	(४१८)	भक्ति-काव्य			
५७	रामकथा	(४११)	,,			
५८	रामकथा	(४३७)	,,			
५६	रामजन्मकथा	(४३८)	,,			

क०सं०	ग्रन्थों के नाम	विषय	रचना-काल	लिपिकाल	विशेष
६०	रामजन्म (४६६)	चरित-काव्य			
६१	रुद्रयामल-तन्त्र (५५३)	तन्त्र-साहित्य			
६२	विचारमाला (४३६)	भक्ति काव्य			
६३	विविध रसायन-निर्माण-विधि (५५६)	चिकित्सा-शास्त्र			
६४	वृन्दावन के विविध वस्तु (५४७	इतिहास			
६५	वृन्दावनलीला (४२०	भक्ति-काव्य		१८८५ वि०	
६६	शकुन-विचार (५१४)	ज्यौतिष		१६४७ वि०	
६७	सतगुरु के लक्षण (गद्य में) (१६६)	सन्त-साहित्य			
६८	स्कन्दपुराण की सांख्य वखानी (४४२)	भक्ति-काव्य			
६६	सगुनौती ५१५	ज्यौतिष			
७०	सारसंग्रह (५५८)	चिकित्सा-शास्त्र		१६४६ वि०	
७१	सारविवेक (१६२)	सन्त-साहित्य			
७२	सालहोत्र (५५७)	चिकित्सा-शास्त्र		१६८३ वि०	
७३	सावित्री-सत्यवान की कथा (४४०)	भक्ति-काव्य			
७४	सीतापताल (४१४)	,,			
७५	सीतापाताल (४४१	,,			
७६	सूरजपुरान ४०६)	,,		१६१० वि०	
७७	सूरजपुरान (४०८)	,,			
७८	सूरजपुराण (४१६)	,,		१६४८ वि०	
७६	सुदामा की बारहखड़ी (४१७)	,,			
८०	हनुमान-अस्तुति (४०६	,,		१६३७ वि०	
८१	हनुमान-ज्यौतिष (५१८)	ज्यौतिष		१६४७ वि०	
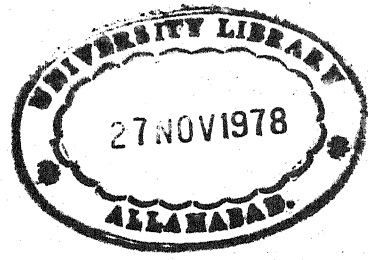
परिशिष्ट-२

ग्रन्थों की अनुक्रमणिका

[ग्रन्थों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई क्रम-संख्याएँ हैं]

अद्‌भुत रामायण—३२३
अद्‌भुत समाचार—५६१
अध्यात्मप्रकाश—५२३, ५२४
अनेकार्थध्वनिमंजरी—५२९
अनेकस्तोत्र-संग्रह—५३९, ५४०
अबजद प्रश्न—५१७
अभयाकरन स्तोत्र—५४६
अमरचन्द्रिका—४६७
अमरफरास—३६१
अर्जुन-गीता—३१८, ३१९, ३२०, ३२२
अष्टनायिका-वर्णन—५०३
आंग्ल इतिहास—५४९
आत्मबोध—४६३
आभास रामायण—४२१
आयुर्वेद-विलास—५५५
ईश-विनय—३९९
उत्तरांगोपकथा—३७२
एकादशी-महातम—३५७
कबीर के भक्तिमाल की टीका—१६५
कबीर-गोरख-गोष्ठी—१६२ ग
कबीरगोष्ठी—१६१ क
करुणाक्रन्दन-शतक—३६८
कर्मविपाक—३५६
कविचित्तरंजन—५५९
कवित्त रामायण—२७७, २७८
कवित्त रामायण और कुण्डलिया—१८४
कवितावली—२८२
कवित्त-संग्रह—४२२, ४८०
कविप्रिया—५००, ५०१, ५०२
कान्हजी के गीत—४००, ४०१
कार्त्तिक-महातम—३५५
काव्य-निर्णय—५०८
कामकला-प्रकाश—५२६
कालीमंगल-मंजरी—३२८
कृष्णजन्म-बधाई—३७४
कृष्ण-जन्मोत्सव—४४३
कृष्ण-रामायण—३०२
कोकसार—५२७, ५२८
गजपुकार—५४५
गणेशचालीसा—५४१
गणेश-महातम—४०३
गर्भगीता ५३२
गरभावली—१६४
गादीविलास—१६७
गीतसंग्रह—४६८, ४७८
गीता-माहात्म्य—५३४
गीतामाहात्म्य-प्रकाश-लीला—३८०
गीतासार—५३४

गीतावली—२७५, २७६
गीता-हिन्दी—५२०, ५२१, ५२२
गुरुदेवचर्चा—४०५
गुरुमहिमा—४१०
गोपाल-गारी—४४४
गोपाल-बाललीला-सार—४५७
गोपीविरह—४६६
गोरखगोष्ठी—१५१
गोविन्दबाल-लीलामृत—३१०
ग्यानगोष्ठी—१८१
ग्यानदीपक—१७३, १७४
ग्यानमूला - १७७
ग्यानस्वरोदय—१८२, १८३
ग्यानसमुद्र—३०५
ग्यानसागर—१६२ क
घनारंग के गीत—३०१
चौरासी पद—३४२, ३४३
चौरासी वार्त्ता—३४५
छप्पै रामायण—२७१, २७२, २७३, २७४
छन्द-त्रिभंगी—५१२
छन्दविचार—५१३
जगन्नाथ-महातम—३५३, ३५४
जगन्नाथ-रामायण—४२३
जयप्रकाश-सर्वस्व—४९२
जंगी समाज—१६१ ख
जंजीरा—१५२
जुगलकिशोर की आरती—५४२
जै मां दुर्गे—५४४
जैमिनीपुराण—२९३, २९४
तंत्रसार—५५१
तिथि-निर्णय—५३६
तीनो बानी—१६६
तुलाराम-पत्र—५६९
तुलसी सतसई—२८३
तुलसी-सुभाषावली—४२४
दधिलीला—३५९
दरियासागर—१७२
दानलीला—३४६, ३४७, ३४८, ४१२
द्विजदर्पण—५४८
दुर्गास्तव—३२४
दुर्गास्तोत्र—५४३
दुखदमनदोहावली—३९६, ३९७
दृष्टान्त-दोहा—४६९
दृष्टान्तबोधिका—४२६, ४२७ ४२८
दृष्टान्तशतक—४२९
दृष्टान्त-संग्रह—४७५
दृष्टान्त-समुच्चय—५३५
दोहावली—२९१
धर्मदासबोध—१६२ ख
धर्मसंवाद—१९४
ध्यानमंजरी—३६२
धनुष-भंग—४१३
नल-चरित्र—४२५
नाममंजरी—५३१
नाममाला—५३०
नासकेत की कथा—५६३
निरगुन—१९१
निरंजना गोष्ठी—१६० ख
निर्भय ज्ञान—१५९
निरनैसार—१८०
नृसिंह-चरित्र—चरित्र ३८५
पंचकल्याण-विधान—५३८
पंचमुद्र—१५६
पद्मावत—३६३
पाण्डव-चरितार्णव—३७७, ३७८, ३७९
पुण्य-महातम—१५३
प्रबोधपचासा—२९६
प्रह्लाद-चरित्र—४०४, ४१५, ४७०
प्रेमप्रकाश—४६३
प्रेममूला—१७५, १७६
प्रेमरतन—३७३, ४३३
प्रेमशतक—३६९

बंगाल का भौगोलिक वर्णन—५५०
बंबभोला—५६६
बच्चू मल्लिक के गीत—४८६
बधाई—३४१
बन्दीमोचन—४०७
बिसातिन लीला—२६२
बिहारी सतसई—४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६
बीजक—१५५, १५६
बैतालपचीसी—५६२
ब्रह्म-विवेक—१७८, १७६
भक्तमाल—२६८
भक्तमाल की टीका—२६६, ३०६
भक्तिजैमाल १८५, १८६
भक्तिसूत्रभाषा—३७०
भगवान की स्तुति—४०२
भजनावली—३२६, ४१६, ४३४
भजननिर्गुन—१६३
भजन-संग्रह—३०३, ३३०, ४३५
भरथकथा—४३६
भरथविलाप २८६, २८७, २८८, ३२७, ३८७
भागवत पद्यानुवाद—३६७
भागवत भाषा—३३८, ३३६
भाषाभूषण—५०६
भूगोलपुराण—५६८
भैरवप्रकाश—३७६
मणिरत्नमाला—५२५
मनबोध—४३०, ४७७
मंगलपुराण—४३१
महाभारतभाषा—३५८, ३५६, ३८३, ३८८
महाभारत (आल्हा)—४७१
मौनगीता—२६०, ४३२
मूलग्यान—१६० ग
मेरी रामकहानी—५६७
मोहनरामचरित—३६८
मोहनशकुनावली—४४६
यंत्र-समुच्चय—५५४
यंत्रावली—५५२
युगल विहार—४६१
रघुवीर नारायण के स्फुट काव्य—४७६
रज्जब की बानी—३०६
रत्नावली—५६५
रमलपुस्तक—५१६
रमलप्रकाश—५१६
रसकुसुमाकर—५०५
रसप्रकाश—५०७
रसराज—४५६
रसविलास—४०७
रसिक दोइकली—४५०
रसिकप्रिया—४६७, ४६८, ४६६
रसिकमाल—३६४
रसिकमालवर्षोत्सव—४५१
राग परज—४१८
राग माला—४६०
राग विहाग—४६१
रामकथा—४११, ४३७
रामगीतावली—२७६
रामचन्द्रिका—३७५, ४४८, ४४६
रामचरितमानस—१६७, १६८, १६६, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०६, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१६, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७
रामचरित-मानसबोध—३८६, ३६०, ३६१
रामचरितरसामृत—३६५
रामजन्म-कथा—४३८
रामरक्षा—३८२
रामरतनगीता—३२१

रामलला नहछू—२८०
राम सतसई—२८६
रामायण—२२८, २२६, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३६, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४६, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५६, २६०, २६१, २६२, २६३
रामायण (गोस्वामी जयरामदासकृत)—३४६, ३५०, ३५१, ३५२
रामायण-सार—३८६
रामाश्वमेध—४६२
रुक्मिणी-मंगल—४६४
रुद्रयामलतंत्र—५५३
वन-महातम—३७१
वर्षोत्सव-निर्णय—५३७
विचारमाला—१८८, ४३६
विजयमुक्तावली—४५८
विनयपत्रिका—२६४, २६५, २६६, २६७
विविध गीत—४७२
विविध गीत-संग्रह—४८४
विविध रसायन-निर्माण-विधि—५५६
विविध राग के गीत—४८६
विभिन्न राग के गीत—४८८
विवेकसार—१८७
वृन्दावन के विविध वस्तु—५४७
वैराग्य-सन्दीपनी—२८४, २८५
व्यंग्यार्थ-कौमुदी—५०६
लघुसंग्रह—४८२
लीला—३६६
लोकपाँजी—१६३
शकुन-विचार—५१४
शब्द—१६८
शिव-दीपक—४६०
शिवपुरानरत्न—३८४
शैवानन्द—२६५
संगीत-प्रकाश—४८७
संत-विलास—१७१ ख
संत-सरन—१६६, १७१ क
संत-सुन्दर—१७०, १७१ ग
सगुनौती—५१५
सत्तगुरु के लक्षण १६६
सत्तनाम—१६०
सरोदै—१५४
सरबंग-सागर—१६१ ग
सर्वसंग्रह—५६०
सहज प्रकाश—१८६
साँझी—३४०
साखी—१५७
सार-विवेक—१६२
सार-संग्रह—५५८
सालहोत्र—५५७
सावित्री-सत्यवान की कथा—४४०
साहित्य-सागर—५१०
सिंहासनबत्तीसी—५६४
सिद्धान्त-सार—१६५
सिद्धान्त-सार पोथी—२६७
सिव-सागर—३११
सीतापाताल—४१४, ४४१
सीतासौरभ-मंजरी—३२५, ३२६
सुखद सतसई—४४५
सुदामा की बारहखड़ी—४१७
सुदामाचरित—३३१, ३३२, ३३३, ४६५
सुन्दरदास के सवैया—४४७
सुन्दर-विलास—३०४
सुवृत्तहार—५११
सूरजपुराण—४०६, ४०८, ४१६
सूरसागर—३०७, ३०८

सेख तकी के गोष्ठी—१६२ घ
सेवकवानी—३४४, ३६५
स्कन्दपुराण की सांख्यबखानी—४४२
स्नेहलीला—३६०
स्फुट कविताएँ—४७६, ४८१, ४८५
हनुमान-अस्तुति—४०६
हनुमान-ज्योतिष—५१८
हनुमान-बाहुक—२६८, २६६, २७०
हनुमान बोध—१६० क
हरिचंद-कथा—४७३
हरिचरित्र—३२४, ३३५, ३३६, ३३७
हरिहर-कथा—३८१
हितोपदेश—४६४, ४६५
हिन्दी-कविता—४८३
हिन्दी-महाभारत—४७४

ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका

[ग्रन्थकारों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई क्रम-संख्याएँ हैं]

अग्रदास—३६२
अवधप्रतापनारायणसिंह—५०५
अनाथदास—१८८
आनन्दकवि—५२७
ईश्वरदास - ३८७
उत्तमदास—३६४
कबीरदास—१५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१ क, ख, ग, १६२ क, ख, ग, घ, १६३, १६४, १६५
कान्हजी सहाय—३९९, ४००, ४०१
किनाराम—१८७
कुंजनदास—३८४
कुशलसिंह—३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२
केशवदास—३७५, ४४८, ४४९, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२
कृष्णदास—३४६, ३४७, ३४८
क्षपणक—५२९
गंगाराम—५३९
गंगाराम—५५९
गजराजकवि—५११
गोपालजी लाल—१९१
गोरखनाथ—१८१
गोस्वामी गोवर्द्धनलाल—४६३
घनारंग—३००, ३०१, ३०२, ३०३
चरनदास—१८२, १८३
चाचा वृन्दावनदास—३६५, ३६६
छत्रसिंह—४५८
जगनकवि—३८०
जनभगवानदास—३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ४५७
जनमोहन - ३६०
जसवंतसिंह (महाराजा)—५०९
जानकीकवि—५१०
जीवनदास—३७४
जैरामदास—३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५५, ३५७, ४६०
तुलसीदास—१९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४,

२४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, ४४४

तुलाराम—३८१, ५६९

दयालदास—३८५

दरियादास—१७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९

दर्शनशर्मा—२९५, २९६, ४६१, ५२५, ५४३, ५४४

दलेलसिंह—३१०, ३११

देवकवि—५०४

देवीदास—३७७, ३७८, ३७९

देवीसिंह—५५५

नन्ददास—५३०, ५३१

नरेन्द्रनारायणसिंह—५५०

नाभादास—३०९

पद्मुमनदास – ४६४

परमानन्ददास—३५९

पलटूदास—१८४

पुरुषोत्तमदास—५६७

पूरन साहब—१८०

प्रतापसिंह (साहि) - ५०६

प्रभुनाथ—५३६

प्रियादास—५३७

प्रियोदास—२८९

प्रेमदास—२९२, २९३, २९४

बच्चू मल्लिक—३७६

बिहारीलाल—४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६

बेनीराम—३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र—५६५

भिनकराम—१९०

मतिराम—४५९

मधुकवि— ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ४४५, ४४६, ५६६, ५६७

मधुसूदनदास—४६२

मलिक मुहम्मद जायसी—३६३

महादेव हलवाई—४८१

रज्जब—३०६

राजकुमार हिन्दूपति—५०८

रामप्रसाददास—१९५, २९७

रामानुजदास—३७३

रामानन्द—३८२

रामप्रसाद—४६६

रामलला—४९४

रामदास (बुलाकीसिंह)—५४८

रायनदास—२९९

लक्ष्मीपति—३२९, ३३०

लक्ष्मीसखी—३६१

लखनजी परमहंस—३८६

लखनद्विज – ५१२

लखनसेन (कवि)—३५८, ३७२

ललितराम—३८३

लालचदास—३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९

लालजीमिश्र—५१७

वंशमणि—४९५

विष्णुगिरि—५६०

श्यामदास—४६५

शाहजहाँ—४०२
शिवकुमार शास्त्री—३६७
शिवनारायणदास—१६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१ क, १७१ ख, १७१ ग
शिवाराम—१८५, १८६
सबलसिंह चौहान—३८२
सहजोबाई—१८९
सुखदेवमिश्र—५१३, ५२३, ५२४
सुन्दरकवि (कुँवरी)—५०३
सुन्दरदास—३०४
सुन्दरदास—३०५, ४४७
सूरजदास—३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७
सूरतमिश्र—४६७
सूरदास—३०७, ३०८
हरिकिसन—५३८
हलधरदास ३३१, ३३२, ३३३
हितहरिवंश—३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ४५०, ४५१
होहंदलाल—५२६

परिशिष्ट-३

[विक्रम-शताब्दी के अनुसार ग्रन्थों के रचनाकाल और लिपिकाल]

शताब्दी	इस शताब्दी में रचित पोथियों की संख्या	इस शताब्दी में लिपिबद्ध पोथियों की संख्या
पन्द्रहवीं	२०	×
सोलहवीं	१०२	×
सत्रहवीं	१७	×
अट्ठारहवीं	८	४
उन्नीसवीं	८	५८
बीसवीं	१६	६०
इक्कीसवीं	२	३

परिशिष्ट-४

महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज-विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का विवरण

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
१.	अग्रदास	१. ध्यानमंजरी	१६३२ वि०	१८९४ वि०	११	ना० प्र० स०, का०, १९००	७७	इनकी अन्य दो रचनाएँ—कुण्डलिया या हितोपदेश-आख्यान (१६९६ वि०)—भी खोज में मिली है। दे० ना० प्र० स०, का०, खो० वि० १९०३, ग्रं० सं० ६०, खो० वि० १९०६–८, सं० १२१ ए, लि० का० १८३४ वि०, खो० वि० १९२०-२२, सं० १ ए; बि० रा० भा० प० (पटना), खो० वि० खं० २, ग्रं० सं० १०४—यह सबसे प्राचीन पाण्डुलिपि है।
						,, ,, १९०६–८	१२१ ए	
				१८५९ वि०		,, ,, १९२०–२२	१ बी	
				१८५० वि०		,, ,, १९२३–२५	४	
				१९०२ वि०		,, ,, १९२६–२८	४ ए, बी, सी,	
						,, ,, १९२९–३१	३ ए, बी, सी,	
				१८६२ वि०		बि० रा० भा० प०, खं–४	३६२	
२.	आनन्दकवि	१. कोकसार		१७३४ ई०		ना० प्र० स०, का० १९०२	५	ग्रन्थकार की अन्य रचनाओं—कोकमञ्जरी, कोकविलास और आसनमंजरीसार—की बारह प्रतियाँ नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को खोज में मिली हैं।
				१७४८ ई०		,, ,, १९०६	८	
				१७६५ ई०		,, ,, १९१७–१९	९७	
				१७८१ ई०		,, ,, १९२३–२५	१३ डी, ई, जी, एच्, आई, जे।	
				१८४६ ई०				
				१८५३ ई०				
				१८८४ ई०				
				१९०१ ई०				
				१८१७ ई०		,, ,, १९२९–३१	१० सी, डी, ई, एफ्, जी, एच्, आई, जे।	
				१८३५ ई०				
				१८६९ ई०				
				१८७५ ई०				
				१८९८ ई०				
				१९०१ ई०				

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्र०	ग्र० सं०	
२.	आनन्द कवि	१ कोकसार		१८२८ ई०	४१			
				१८८३ वि०		बि०रा०भा०प० (पटना) खं०१	७९	
३.	कबीरदास			१८१३ वि०		,, खं०४	५२७, ५२८	
		१ गोरखगोष्ठी *		१७५३ वि०	८	ना० प्र० स०, का० १९०९--११	१४३ यू पी	* 'गरभावली' और केवल 'कबीर-गोष्ठी' नाम से भी यह ग्रन्थ मिला है।
						,, ,, १९२९-३१	१७८ आई	
		२ जंजीरा *		१२७८ फसली	२	बि०रा०भा०प० (पटना) खं०१	२३ ख	*इस नाम का एक ग्रन्थ कालिदास त्रिवेदी-रचित ना०प्र०स०का० की खोज में मिला है। दे० खो०वि० १९०४, सं०५; खो०वि० १९०६-८, सं० १७८डी; खो० वि० १९२३-२५, सं० २०० ।
						खं०४	१५१, १६१ क, १६२ ग, १६४	
						ना० प्र० स०, का० १९३२--३४	१०३ जे	
						बि०रा०भा०प० (पटना) खं०४	१५२	
		३ सरोदै		१९१८ वि०	५	ना० प्र० स०, का० १९०९--११	१४३ टी	
				१९५६ वि०		,, १९२३-२८	२१४ बी	
						,, १९३२-३४	१६७बी, १०३पी	
						बि०रा०भा०प० (पटना) खं०४	१५४	
		४ बीजक		१८५६ वि०	९	ना० प्र० स० का० १९०९-११	१४३ एल्	
						,, १९२०-२२	७४ ए	
				१८८५ वि०		,, १९२३-२५	१९८डी,ई,एफ्	
				१९०७ वि०		,, १९२९-३१	१७८ डी	
				१९५१ वि०		बि०रा०भा०प० (पटना) खं०१	८०	
						,, खं०४	१५५, १५६	
		५ साखी		१७६४ वि०	७	ना० प्र० स०, का० १९११	८५	
						,, १९०२	५५,१८६,१८७	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
		५ साखी		१७६७ वि०		ना० प्र० स० का० १९०९-११	१४३ बी	* काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा को कबीरदास के अट्ठानवे ग्रन्थों की एक सौ बीस प्रतियाँ खोज में मिली हैं। दे० 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण', पहला भाग, पृ०सं० १८; 'हस्तलिखित हिन्दी-ग्रन्थों का चौदहवाँ त्रैवार्षिक विवरण', पृ० सं० ५४ और 'पन्द्रहवाँ त्रैवार्षिक विवरण' पृ० सं० ४१।
				१९२४ वि०		,, ,, १९३२-३४	१०३ ओ	
						बि० रा० भा० प० खं० ४	१५७	
३.	कबीरदास	६ पंचमुद्रा		१७४७ वि०	३	ना० प्र० स० का० १९३५-३७	४९ एस्	
				१९२८ वि०		बि० रा० भा० प०, खं० ३	१४१	
				१९६६ वि०		,, ,, ४	१५८	
		७ निर्भयज्ञान		१८८८ वि०	३	ना० प्र० स० का० १९०९-११	१४३ ए	
						,, ,, १९०६-८	१७७ आर	
						बि०रा०भा०प०(पटना), खं० ४	१५९	
		८ हनुमानबोध		१९०० वि०	२	,, ,, ,, १	२३ क	
						,, ,, ,, ४	१६० क	
		९ निरंजनागोष्ठी		१९०० वि०	१	,, ,, ,, ४	१६० ख	
		१० मूलग्यान		१९०० वि०	१	,, ,, ,, ४	१६० ग	
		११ जंगी समाज		१९०१ वि०	१	,, ,, ,, ४	१६१ ख	
		१२ सरबंगसागर		१९०१ वि०	१	,, ,, ,, ४	१६१ ग	
		१३ ग्यानसागर		१७९० वि०	२	ना० प्र० स० का० १९०९-११	१४३ एस्	
						बि०रा०भा०प०(पटना) खं० ४	१६२ क	
		१४ धरमदासबोध		१९१० वि०	१	,, ,, ,, ४	१६२ ख	
		१५ सेख तकी के गोष्ठी		१९१० वि०	१	,, ,, ,, ४	१६२ घ	
		१६ लोकपांजी (कबीर और धर्मदास की गोष्ठी)			२	ना० प्र० स० का० १९०६-८	१७७ आई	
						बि०रा०भा०प० (पटना) खं० ४	१६३	
		१७ कबीर के भक्तिमाल की टीका *		१९३९ वि०	१	,, ,, ,, ४	१६५	
		पुण्य महातम		१९३३ वि०	१	,, ,, ,, ४	१५३	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	रचना-काल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्र०	ग्र० सं०	विशेष
			प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					
४.	कुशल सिह	१ अर्जुन गीता	१६७७ वि०	१९३९ वि०	६	ना० प्र० स० का० १९२३-२५	२३१	
				१९१६ वि०		ना० प्र० स० का० १९२६-२८	४७२	
						बि० रा० भा० प० खं० ४	३१८, ३१९, ३२०, ३२२	
		२ रामरतनगीता		१९२२ वि०	७	ना० प्र० स० का० १९२३-२५	२३१	
				१९०४ वि०		,, १९२६-२८	२५४ ए बी	
						बि० रा० भा० प० (पटना) खं० १	१६ ख	
						,, ,, खं० ३	१३६	
						,, ,, खं० ४	३२१	
५.	केशवदास*	१ रामचन्द्रिका		१८२५ वि०	१३	ना० प्र० स० का० १९०२	२५२	*कवि की अन्य (विज्ञान-गीता और नखसिख) रचनाएँ भी खोज में मिली हैं। दे० ना० प्र० स० का० खो० वि० १९००, ग्र० सं० ५५; खो० वि० १९०४, ग्र० सं० १२७; खो० वि० १९२०-२२, ग्र० सं० ८९; खो० वि० १९२६-२८, ग्र० सं० २३३ एच्, आई; बि० रा० भा० प० (पटना) खं०१, ग्र०सं० ७३,९७।
				१६३१ वि०		,, १९०३	२१	
						,, १९२३-२५	२०७	
				१८६९ वि०		,, १९२६-२८	२३३ ई	
				१८४९ वि०		,, १९२९-३१	१९२ ए बी सी	
				१७९३ वि०		बि० रा० भा० प० (पटना) खं० १	९८	
				१८३५ वि०		,, ,, खं० २	५८	
				१९३७ वि०		,, ,, ,,	५९, ९८	
						,, ,, खं० ४	३७५, ४४८, ४४९	
		२ रसिकप्रिया		१८१४ वि०	१५	ना० प्र० स० का० १९०३	८९	
						,, १९०४	१२८	
						,, १९१७-१९	९६ बी	
				१९१७ वि०		,, १९२०-२२	८९ बी	
						,, १९२३-२५	२०७	
				१९०८ वि०		,, १९२६-२८	२३३ एफ् जी	
						,, १९२९-३१	१९२ एफ्	

ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
		रचना-काल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्र०	ग्र०-सं०	
केशवदास	२ रसिकप्रिया		१८६७ वि०		बि० रा० भा० प०(पटना)खं०१	८६,१००	
			१९१६ वि०		” ” ” २	५६,५७	
			१८५४ वि०		” ” ” ३	४९७, ४९८, ४९९	
	३ कविप्रिया			१८	ना० प्र० स० का० १९००	५२	
					” ” १९०२	१८३	
					” ” १९०४	१२५, १२६	
			१७६९ वि०		” ” १७९	९६ ए	
					” ” १९२०–२२	८२ ए, बी	
					” ” १९२३–२५	२०७	
			१८८२ वि०		” ” १९२६–२८	२३३ बी, सी, डी	
					” ” १९२९–३१	१९२ डी, ई	
			१८८३ वि०		बि० रा० भा० प० (पटना)खं०२	१०	
			१९०० वि०		” ” ”	११	
					” ” ” ४	५००, ५०१, ५०२	
					ना० प्र० स० का० १९०६–८	१२१, १२८	
कृष्णदास	१ दानलीला	१६०७			” ” १९०९–११	८१, ३०३	
	१ ज्ञानस्वरोदय	वि०	१९०५ ई०	१३	” ” १९२६–२८	२४७	
			१९२४ वि०		बि० रा० भा० प०(पटना)खं०३	१०९	
			१८५७ ई०		” ” ” ४	३४६, ३४७, ३४८	
चरनदास		१७६०	१८३३ वि०	१६	ना० प्र० स० का० १९०१	७०	
		वि०	१८१५ वि०		” ” १९०३	१३५	
					” ” १९०६–८	१४७ ई	
					” ” १९१७–१९	३८ ए	
					” ” १९२०–२२	२९ बी	

ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
		रचना-काल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्र०	ग्र० सं०	
चरनदास	१ ज्ञानस्वरोदय	१७६० वि०			ना० प्र० स०, का० १९२३–२५	७४	
					,, १९२६–२८	७८	
			१९१८ वि०		,, १९२९–३१	६५ डब्ल्यू, एक्स, वाई, जेड्	
			१८७७ वि०		ब्रि०रा०भा०प० (पटना) खं०१	६९	
			१८७७ वि०		,, खं०३	११४	
			१२५९ फ० = १९०९वि०		,, ,,	१३३	
			१९२४ वि०		,, खं०४	१८२	
			१८९३ वि०	१५६	,, ,,	१८३	
तुलसीदास	१ रामचरित-मानस		१६४७ वि०		ना० प्र० स० का० १९००	१	
			१६०४ वि०		,, १९०१	२२	
			१६७४ वि०		,, १९०१	२८	
			१७६७ वि०		,, १९०३	१६७,१६८,१६९	
			१८१८ वि०		,, १९०४	१४४	
			१६०४ वि०		,, १९२०–२२	१९८ ए	
					,, १९२३–२५	४३२	
			१९१३ वि०		,, १९२६–२८	४८२ ए से जेड् तक	
			१८७८ वि०				
			१८७९ वि०			३२५ ए से जेड् तक	
			१७९० वि०				
			१८५६ वि०				
			१७६० वि०				
			१८८३ वि०				
			१८८७ वि०				
			१९०४ वि०				

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० र०	ग्रं० सं०	
८.	तुलसीदास	१ रामचरितमानस		१८६२ वि०				
				१९०२ वि०				
				१७९० वि०				
				१८५६ वि०				
				१७६० वि०				
				१८८३ वि०				
				१८८७ वि०				
				१९०४ वि०				
				१८६२ वि०				
				१९०२ वि०				
				१७९० वि०				
				१८७२ वि०				
				१८८८ वि०				
				१९३२ वि०				
				१८३४ वि०		ना० प्र०स ० का० १९२९-३१	३२५ ए से जेड् तक और ३२५ ए २ से ओ २ तक	
				१९१३ वि०				
				१८७८ वि०				
				१८७९ वि०				अर्थात् कुल ४१ पाण्डुलिपियां
				१७९० वि०				
				१८५६ वि०				
				१८७९ वि०				
				१७६० वि०				
				१८७९ वि०				
				१८८३ वि०				

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्र० सं०	
८.	तुलसीदास	१ रामचरितमानस		१८८७ वि०				
				१९०४ वि०				
				१९०६ वि०				
				१८६२ वि०				
				१८७९ वि०				
				१८८७ त्रि०				
				१९०२ वि०				
				१९०४ वि०				
				१७९० वि०				
				१८२५ वि०				
				१८७२ त्रि०				
				१८७९ वि०				
				१८८३ वि०				
				१८८२ वि०				
				१८७८ वि०				
				१८८७ वि०				
				१९३२ वि०				
				१७६० वि०				
				१८७२ वि०				
				१८७८ वि०				
				१८८७ वि०				
				१९०६ वि०				

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
८.	तुलसीदास	रामचरितमानस		१७६० वि०				
				१९०२ वि०				
				१९२२ वि०		बि० रा० भा० (पटना) खं० १	२	
				१८४७ वि०		,,	३	
				१८८२ वि०		,,	७	
				१८५९ वि०		,,	५	
				१८६४ वि०		,,	१८	
				१८३६ वि०		,,	४१	
				१९०९ वि०		,,	९९	
				१८८७ ई०		,, खं० ३	१०४,१२१,	
				१८७१ वि०			११८,१२७,	
				१८५८ वि०			१२९,१३०,	
				१२६७ फ०=१९१७ वि०			१३८	
				१९२२ वि०, १८८८ वि०		,, खं० ४	१९७ से २६३	
				१९०५ वि०, १९०३ वि०			तक *	* अर्थात् कुल ६६ पाण्डु-लिपियाँ
				१८९० वि०, १९१७ वि०				
				१८७२ वि०, १९२२ वि०				
				१८७८ वि०, १८९३ वि०				
				१८८१ वि०, १८६९ वि०				
				१९०१ वि०, १९१७ वि०				
				१९०४ वि०, १९४१ वि०				
				१९११ वि०, १८५१ वि०				
				१८४४ वि०, १८८१ वि०				
				१८९२ वि०, १८५५ वि०				

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्र०	ग्र० सं०	
८.	तुलसीदास	१ रामचरित-मानस		१८५९ वि०, १९२१ वि०				
				१९०० वि०, १९०५ वि०				
				१९२२ वि०, १९०५ वि०				
				१८८५ वि०				
		२ विनयपत्रिका		१८२७ वि०	२०	ना० प्र० स० का० १९०६-८	२४५ जी	
				१८२२ वि०		,, १९०९-११	३२३ एल्	
						,, १९१७-१९	१९६ एफ्	
						,, १९२०-२२	१९८ के	
						,, १९२३-२५	३३२	
						,, १९२६-२८	४८२ ए २, बी २, सी २	
						,, १९२९-३१	३२५ पी २, क्यू २	
						बि०रा०भा०प० (पटना) खं०१	३९	
				१८९८ वि०, १८६९ वि०		,, खं०२	६२,६३,६४,६५,८४	
				१८६६ वि०		,, खं०४	२६४, २६५, २६६, २६७	
		३ हनुमान बाहुक		१८०२ वि०	१५	ना० प्र० स० का० १९०१	६०	
				१८७१ वि०		,, १९०३	१७०	
				१८६० वि०		,, १९०६-८	२४५ बी, सी	
						,, १९०९-११	३२३ डी, ८५०	
						,, १९२०-२२	१९८ डी	
						,, १९२३-२५	४३२	
						,, १९२६-२८	४८२ टी, यू, बी	
						,, १९२९-३१	३२५ जेड् २	
				१९२४ वि०		बि०रा०भा०प० (पटना) खं०४	२६८,२६९,२७०	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्र०	ग्र० सं०	
८.	तुलसीदास	४ छप्पै रामायण		१८७१ वि०	९	ना० प्र० स०, का० १९०६-८	२४५ एच्	
				१९१९ वि०		बि० रा० भा० प० (पटना) खं०२	१९, २०	
				१९०१ वि०, १९४० वि०		,, खं० ३	१४३, १४७	
				१९३४ वि०				
				१९३५ वि०		,, खं० ४	२७१, २७२,	
				१९४४ वि०			२७३, २७४	
		५ गीतावली*		१८०२ वि०	१८	ना० प्र० स० का० १९०४	६०	*रामगीतावली नाम से भी यह रचना अभिहित हुई है।
				१८९७ वि०		,, १९०९-११	३२३ जी	
						,, १९१७-१९	१९६ सी	
				१८२४ वि०		,, १९२०-२२	१९८ एच्	
						,, १९२३-२५	४३२	
				१९०७ वि०		,, १९२६-२८	४८२ आर, एस्	
				१८८० वि०, १८८४ वि०		,, १९२९-३१	३२५ एस् २,	
							३२५ टी २	
				१७८८ वि०			३२५ यू २,	
				१९१० वि०, १८८३ वि०			३२५ वी २	
				१९०५ वि०, १८७६ वि०		बि० रा० भा०प० (पटना) खं० २	१७, ८७, ९४	
						,, खं० ४	२७५, २७६,	
							२७९, २८१	
		६ कवित्त रामायण		१९९९ वि०	१२	ना० प्र० स० का० १९०३	१२५	
				१८५९ वि०		,, १९२०-२२	१९८ एफ्	
						,, १९२३-२५	४३२	
						,, १९२६-२८	४८२ ई, एफ्	
				१९१९ वि०		,, १९२९-३१	३२५ आर २	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल और खोज विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० सं०	ग्र० सं०	
८.	तुलसीदास	कवित्त रामायण		१८९४ वि०		बि० रा० भा० प०(पटना)खं०२	१३	
				१९४० वि०		” ” ”	१२७	
				१८९९ वि०		” ” ” ३	१५०	
				१९०८ वि०		” ” ” ४	२७७,२७८,२८२	
		७ कृष्णगीतावली		१८०२ वि०	८	ना० प्र० स०, का० १९०४	१०७	
				१८३५ वि०		” ” १९०९–११	३२३ सी	
						” ” १९२०–२२	१९८ जी	
						” ” १९२३–२५	४३२	
						” ” १९२६–२८	४८२ एच्	
				१७८८ वि०, १८८४ वि०		” ” १९२९–३१	३२५ यू २, वी २	
						बि० रा०भा० प०(पटना) खं०४	२८१	
		८ वैराग्यसंदीपनी			१०	ना० प्र० स० का० १९००	७	
				१८२९ वि०		” ” १९०३	८१	
				१८०० वि०		” ” १९०६–८	२४५ ई	
						” ” १९०९–११	३२३	
						” ” १९१७–१९	१९६ डी	
						” ” १९२०–२२	१९८ जे	
						” ” १९२६–२८	४८२ डी	
				१९१९ वि०		बि० रा० भा० प०(पटना)खं० २	६६	
						” ” ” ४	२८४, २८५	
		९ तुलसी सतसई		१९०१ वि०	५	ना० प्र० स० का० १९०६–८	२४५ सी	
				१९१५ वि०		बि० रा० भा० प०(पटना)खं० २	२२, ४९, ५३	
				१९७४ वि०				
				१९०६ वि०		” ” ” ४	२८३	

ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल और खोजविवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
		रचना-काल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०	
तुलसीदास	१० भरथविलाप			७	ना० प्र० स० का०	४८५ ए	* गोस्वामी तुलसीदास की ग्रन्थ तीन—रामलला नहछू, रामसतसई और मीनगीता—रचनाएँ इस विवरण में हैं।
			१८८८ वि०		बि०रा०भा०प०(पटना) खं० २	४८	
			१९०७ ई०		,, खं० ३	१०७	
			१८५७ वि०		,, खं० ३	१३९	
			१९११ वि०, १८५७ ई०		,, खं० ४	२८६,२८७,२८८	
			१९२४ वि०				
	११ दोहावली *		१८४४ वि०	१२	ना० प्र० स०, का० १९०४	६२	
			१८३९ वि०		,, १९०६-८	२४५ सी	
					,, १९०९-११	३२३ बी	
					,, १९२०-२२	१९८ बी, सी	
					,, १९२३-२५	४३२	
					,, १९२६-२८	४८२ ओ, पी, क्यू	
					,, १९२९-३१	३२५ डब्ल्यू २	
			१९९६ वि०		बि०रा०भा०प०(पटना) खं० २	२४४	
					,, खं० ४	२९१	
दरियादास	१ दरियासागर		१८८१ वि०	७	ना० प्र० स० का० १९०९-११	५५ ई	
			१२६६ फ०		बि०रा०भा०प० पटना) खं० १	४५ ख, ५७ क, ६० ख, ६१ क, ६२ क	
			१९०३ वि०		,, खं० ४	१७२	
	२ ज्ञानदीपक		१९०७ वि०	८	ना० प्र० स० का० १९०९-११	५५ आई	
			१२६६ फ०		बि०रा०भा०प०(पटना) खं० १	४५ क, ४६,४७, ५७ ख,६५ क	
			१९६९ वि०		,, खं० ४	१७३, १७४	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्र०	ग्र० सं०	
९.	दरियादास	३ प्रेममूला		१२६६ फ०,	६	बि० रा० भा० प०(पटना)खं०१	४५ ङ, ५२ क, ६० क, ६५ घ	* इन पोथियों के अतिरिक्त कवि की एक 'ज्ञानमूला' भी इस विवरण में है।
				१२८९ फ०,		,, ,, ,, ४	१७, १७५	
				१८९९ वि०				
		४ ब्रह्मविवेक*		१९१३ वि०	७	ना० प्र० स० का० १९०९-११	५५ बी	
				१९४९ वि०		बि० रा० भा० प० (पटना)खं०१	४५ च, ५२ ग, ६२ ग, ६५ ग	
				१२६६ फ०,		,, ,, ,, ४	१७८, १७९	
				१२८९ फ०,				
				१९१३ फ०,				
१०.	नन्ददास	१ नाममाला (अनेकार्थमञ्जरी)			२१	ना० प्र० स० का० १९०२	५८	
				१८०२ वि०		,, ,, १९०३	१५३	
				१८०६ वि०		,, ,, १९०९-११	२०८ डी	
				१८०१ वि०,		,, ,, १९२०-२२	११३ डी, ई	
				१८४९ वि०		,, ,, १९२६-२८	३१६ ए से जी तक= ७ प्रतियाँ	
				१८१४ वि०		,, ,, १९२९-३१		
				१९०१ वि०		,, ,, ,,	२४४ ए, बी, सी	
				१८५२ वि०		बि० रा० भा० प०(पटना)खं०१	६	
				१८५८ वि०		,, ,, ,, २	८८, १२४	
				१९४१ वि०		,, ,, ,, ३	१२३	
				१८४१ त्रि०		,, ,, ,, ३	१३१	
				१८९३ वि०		,, ,, ,, ४	५३०	
		२ मानमञ्जरी			८	ना० प्र० स० का० १९०२	२०९	
						,, ,, १९०३	१५४	
				१८०६ वि०		,, ,, १९०९-११	२०८ सी	
				१८१४ वि०		,, ,, १९२६-२८	३१६ एन्	
				१८५२ वि०		,, ,, १९२९-३१	२४४ ई, एफ्, जी	
				१८६० वि०				

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल एवं खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्र०	ग्र० सं०	
				१९०२ वि०		त्रि०रा०भा०प० (पटना) खं०४	५३१	
११.	नाभादास	१ भक्तमाल	१६५७ वि०	१७१३ वि०	८	ना० प्र० स० का० १९०९--११	२११	
						,, १९१७–१९	११७	
				१९०२ वि०		,, १९२३–२५	२८९	
				१९०७ वि०		,, १९२९–३१	२७३ बी	
				१८७७ ई०, १९३४ वि०		बि०रा०भा०प० (पटना) खं०१	९	
						,, ,,	१०, ११	
				१७९६ वि०		,, खं०४	३०९	
१२.	बिहारीलाल	१ बिहारी सतसई		१७१८ वि०	४१	ना० प्र० स० का० १९०१	१७, ५२, ७५	
				१७८० वि०		,, १९०२	८	
				१७६६ वि०, १७४६ वि०		,, १९०३	१३३, १३५	
				१७८२ वि०		,, १९०६–८	३ ए, ९९ ए	
				१७९३ वि०		,, १९२०–२२	२० ए, बी	
				१७१७ वि०		,, १९२३–२५	६२ ए–जे = १० प्रतियाँ	
				१८०५ वि०		,, १९२६–२८	६८ ए–ई = ९ प्रतियाँ	
				१७६२ वि०		,, १९२९–३१	५ए, बी, सी	
				१८९० वि०		,, १९३८–४०	११९	
						त्रि०रा०भा०प० (पटना) खं०१	७२	
				१९१२ वि०, १९१३ वि०		बि०रा०भा०प० (पटना) खं०२	४२, ४३	
				१८१३ वि०, १८५७ वि०		,, खं०४	४५२,४५३,४५४,४५५ ४५६	
१३.	मतिराम	१ रसराज	१७०७ वि०	१९८२ वि०	१४	ना० प्र० स० का० १९००	४०	
				१७९१ वि०		,, ,, १९०१	६७	
				१८३३ वि०		,, ,, १९०६–८	१९६ ए	
						,, ,, १९२०–२२	१०५ बी	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल और खोजविवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्र०	ग्रं० सं०	
१३.	मतिराम	१ रसराज*			१०	ना० प्र० स०, का० १९२३-२५	२७६	* कवि की अन्य
						,, १९२६-२८	३०० डी से जे० तक=७ प्रतियाँ	चार—लखन-शृङ्गार, ललित-
				१९२१ वि०		बि०रा०भा०प०(पटना) खं० २	५४	ललाम, वृत्त-
				१८८१ विं०, १७५८ वि०, १८४२ वि०, १८७९ वि०		,, खं० ४	४५९	कौमुदी, और साहित्यसार—
१४.	मलिक मुहम्मद जायसी	१ पद्मावत	१५९७ वि०	१९३५ वि०	१२	ना० प्र० स० का० १९००, १९०१, १९०३, १९०४	५४ २४, २५, ५३ १५०, १३१	ग्रंथों के हस्तलेख काशी-नागरी-प्रचारणी सभा
						,, १९२६-२८	२८९ बी०	को खोज में
				१८५८ वि०		,, १९२९-३१	२२५	मिले हैं।
				१८७३ वि०		बि०रा०भा०प०(पटना) खं० २	३०	
				१८९१ वि०		,, ,,	३२	
				१८८१ वि०		,, ,,	३३	
						,, खं० ४	३६३	
१५.	लालचदास	१ हरिचरित्र	१५२७ वि०	१८५८ वि०	११	ना० प्र० स० का० १९२३-२५	२३८	कवि का दूसरा
						,, १९२६-२८	६३, २६१ ए, बी	ग्रन्थ—विष्णु-
						बि०रा०भा०प०(पटना) खं०-१	१	पुराण—भी प्राप्त
						,, खं० २	१०५	हुआ है।
						,, खं० ३	३३४, ३३५, ३३६	
१६.	सबलसिंह चौहान	१ महाभारत भाषा	१७२७ वि०		९	ना० प्र० स० का० १९२४	३३७, ३३८, ३३९	
						,, १९०६-८	६६	
						,, १९२३-२५	६३, २२४ ए, बी	
						,, १९२६-२८	४११ बी, सी, डी	

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रंथों के रचनाकाल, लिपिकाल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्र०	ग्र० सं०	
				१९२९ वि०		बि०रा०भा०प०(पटना) खं० ३	१३४	*ग्रन्थकार
						,, खं० ४	३८८	ग्रन्थ २२
								नाएँ--पंचेन्द्रि
१७.	सहजोबाई	१ सहजप्रकास	१८००वि०		६	ना० प्र० स० का० १९००	१२९	निर्णय,विचा
				१८१९ वि०		,, १९०३	१६२	माला, विनर
						,, १९०६--८	२२६	सार, विवेक
						,, १९२०--२२	१७१	चिन्तामणि,
						,, १९२६-२८	४१५	सुन्दरदास
						बि०रा०भा०प०(पटना) खं० ४	१८९	बानी,हरिबो
१८.	सुन्दरदास	१ सुन्दरविलास*	१७४६वि०	१८७० वि०	३	ना० प्र० स० का० १९०६—८	२४२ सी	सांख्यज्ञान,
						,, १९२३—२५	४१५	विवेक चेताव
				१९३० वि०		बि०रा०भा०प०(पटना) खं० ४	३०४	और तारक
		२ ज्ञानसमुद्र		१७७३ वि०	६	ना० प्र० स० का० १९०२	१६५	चितामनि,ज्ञान
				१८०० वि०		,, १९०३	३४	सागर, सुन्दर
				१८६३ वि०		,, १९०६—८	२४२ बी	सांख्य, सुन्द
				१८७८ वि०		,, १९०९—११	३११ ए	काव्य, सुन्दर
						,, १९२३-२५	४१५	ष्टक, सर्वांग
				१७७३ वि०		बि०रा०भा०प०(पटना) खं० ४	३०५	योग, सुख
		३ सवैया		१८७० वि०		ना० प्र० स० का० १९०२	२५, २६	समाधि, स्वप्न
				१८३४ वि०	११	,, १९०६-८	२४२ ए	बोध, वेद
						,, १९१२-१६	१८४ बी	विचार,वरांतप
						,, १९२३-२५	४१५	सुन्दरबानी,
						,, १९२६-२८	४६९ बी,सी,डी	सहजानन्द, गृह
						वि०रा०भा०प०(पटना) खं० २	७५, ७६	वैराग्यबोध,

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या				
			रचनाकाल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्रं०	ग्रं० सं०
						वि० रा० भा० प० (पटना) खं० ४	४४७
१९.	सूरजदास	१ रामजन्म		१९५३ वि०	१२	ना० प्र० स० का० १९१७-१९	१८७ ए
				१९०९ वि०=१८५२ ई०		,, ,, १९२२-२५	४१७ सी
				१९३७ वि०		,, ,, १९२६-२८	४७३ बी
				१९८८ वि०		बि० रा० भा० प० (पटना) खं० १	१६ क
						,, ,, खं० २	४७
				१९०२ वि०, १९१० वि०		,, ,, खं० ३	१०५
				१८५७ ई०		,, ,, खं० ४	३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७,
२०.	सूरदास	सूरसागर*		१८५३ वि०	२८	ना० प्र० स० का० १९०१	२३
				१७९२ वि०		,, ,, १९०४	१४२
				१८७३ वि०		,, ,, १९०६-८	२४४ सी
				१७९८ वि०		,, ,, १९१७-१९	१८६ बा, सी, डी
				१८७६ वि०		,, ,, १९२३-२५	४१६ एफ्, जी एच्, आई, जे
				१८९९ वि०		,, ,, १९२६-२८	४७१ एम्, एन्
				१८६६ वि०		,, ,, १९२९-३१	३१९ए, बी, डी, ई, एफ्, जी, एच्
				१९१७ वि०		,, ,, १९३२-३४	२१२ जी, एच् आई
				१८२० वि०			
				१८४४ वि०		बि० रा० भा० प० (पटना) खं० १	४३
				१८२५ वि०		,, ,, खं० २	३९

क्रम-संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थनाम	प्राप्त ग्रन्थों के रचनाकाल, लिपिकाल और खोज-विवरणान्तर्गत ग्रन्थ-संख्या					विशेष
			रचना-काल	लिपिकाल	प्राप्त प्रतियों की संख्या	खो० वि० ग्र०	ग्र० सं०	
२१.	हलधरदास	१ सुदामाचरित		१९१३ वि०	८	बि०रा०भा०प०(पटना) खं० २	८०	
				१९२४ वि०		,, खं० ३	११३	
				१९११ वि०		,, खं० ४	३०७, ३०८	
						ना० प्र० स० का० १९०६—८	५६	
				१८८२ वि०		,, १९०९—११	१०४	
				१८०० वि०		,, १९२६—२८	१६३	
				१८४० वि०		बि०रा०भा०प०(पटना) खं० २	२५	
				१७४९ श० = १८८४वि०		,, खं० ३	१४६	
				१८६७ वि०		,, खं० ४	३३१,३३२,३३३	